

श्री गोम्मटसार कर्मकांड

अधिकार 9
कर्म-स्थिति
रचना-सद्भाव
अधिकार

Presentation
Developed By:
Smt Sarika Vikas
Chhabra

मंगलाचरण



पणमिय सिरसा णेमिं, गुणरयणविभूसणं महावीरं ।
सम्मत्तरयणणिलयं, पयडिसमुक्कित्तणं वोच्छं ॥1॥
सिद्धे विसुद्धणिलये, पणट्टुकम्मे विणट्टुसंसारे ।
पणमिय सिरसा वोच्छं, कम्मट्ठिठदिरयणसम्भावं॥913॥

सिद्धे विसुद्धणिलये, पणट्टुकम्मे विणट्टुसंसारे ।
पणमिय सिरसा वोच्छं, कम्मट्ठिठदिरयणसम्भावं ॥913॥

- अर्थ-अत्यंत नष्ट हुए है घाति-अघाति कर्म जिनके,
 - विशेषता से नष्ट किया है चतुर्गति-भ्रमणरूप संसार जिन्होंने,
 - निर्मल आत्मप्रदेशों में है स्थान जिनका
 - ऐसे सिद्धपरमेष्ठियों को मैं मस्तक से नमस्कार करके
 - कर्मों की स्थिति की रचना का सद्भाव का कथन करता हू
- ॥913॥

जिनके घाति-अघाति कर्म प्रकर्षरूप से नष्ट हुए हैं,

जिन्होंने संसार को नष्ट कर दिया है,

विशुद्ध आत्म-प्रदेशों में जिनका निवास है,

ऐसे सिद्ध परमेष्ठी को मस्तक झुकाकर नमस्कार करके

कर्म-स्थिति-रचना-सद्भाव को कहता हूं ।



संसार – द्रव्य, क्षेत्र, काल, भव और भावरूपी पंच प्रकार संसार

कर्म-स्थिति
रचना-
सद्भाव

कर्मों की स्थिति में

प्रत्येक समय

निषेकों में कितना-कितना

कार्मण द्रव्य पाया जाता है?

ऐसी रचना के अस्तित्व के कथन को

कर्म-स्थिति-रचना-सद्भाव कहते हैं ।



बंध

शरीर नामकर्म के उदय से और योग के निमित्त से

कार्मण वर्णारूप से आये हुए पुद्गल स्कंध

मूल प्रकृति और उत्तर प्रकृतिरूप होकर

आत्मा के प्रदेशों में परस्पर प्रवेश करते हैं

उसे बंध कहते हैं ।

बन्ध के प्रकार

प्रकृति बन्ध

मूल-उत्तर
प्रकृतियों का
यथायोग्य
जीव से
संबन्ध होना

स्थिति बन्ध

बंधी प्रकृतियों
का जीव से
संबन्धरूप
रहने का
काल

अनुभाग बन्ध

प्रकृतियों में
फल देने की
शक्ति

प्रदेश बन्ध

प्रकृतिरूप
परिणत
पुद्गल
परमाणुओं
का प्रमाण

जैसे —

आम की प्रकृति

मीठा

आम की स्थिति

5 - 7 दिन

आम का अनुभाग

कितना अधिक मीठा,
स्वाद्विष्ट

आम के प्रदेश

सैकड़ों स्कंध या अनेकों
Slices

वैसे —

मतिज्ञानावरण की
प्रकृति

मतिज्ञान को आवृत्त करने
की है ।

मतिज्ञानावरण की
स्थिति

अधिकतम 30 कोड़ाकोड़ी
सागर

मतिज्ञानावरण का
अनुभाग

लता, दारु, अस्थि, शैल रूप

मतिज्ञानावरण के
प्रदेश

मतिज्ञानावरणरूप परिणत
कर्म-परमाणुओं की संख्या

कम्मसरूवेणागय-दब्बं ण य एदि उदयरूवेण ।
रूवेणुदीरणस्स व, आबाहा जाव ताव हवे ॥914॥

- अर्थ— कार्मणशरीर नामक नामकर्म के उदय से योग द्वारा आत्मा में कर्मस्वरूप से परिणमता हुआ जो पुद्गलद्रव्य जब तक उदयस्वरूप (फल देने स्वरूप) अथवा उदीरणा (बिना समय के कर्म का पाक होना) स्वरूप न हो तब तक के उस काल को आबाधा कहते हैं ॥914॥

आबाधा

बन्धरूप से अवस्थित

पौद्गलिक कर्म

जितने काल तक उदयरूप या उदीरणारूप नहीं होते

उतने काल को आबाधा कहते हैं ।

बाधा (कर्म) का अभाव = अबाधा, आबाधा

उदयं पडि सत्तण्हं, आबाहा कोडकोडि उवहीणं ।
वाससयं तप्पडिभागेण य सेसट्टिदीणं च ॥915॥

- अर्थ— उदय की अपेक्षा से एक को-2 सागर प्रमाण स्थिति की आबाधा सौ वर्ष प्रमाण जानना और
- बाकी स्थितियों की आबाधा इसी प्रतिभाग से जानना ।
- यह क्रम आयुकर्म के सिवाय सात कर्मों की आबाधा के लिये उदय की अपेक्षा से है ॥915॥

उदय की अपेक्षा मूल प्रकृतियों की आबाधा

- 1 को-2 सागर की आबाधा 100 वर्ष होती है ।
- इसी के अनुसार त्रैराशिक से सबकी आबाधा निकाल लेना चाहिए ।
- जैसे 1 को-2 सागर की आबाधा 100 वर्ष होती है,
- तो 70 को-2 सागर की आबाधा कितनी होगी?
- $= \frac{100 \text{ वर्ष}}{1 \text{ को-2 सागर}} \times 70 \text{ को-2 सागर}$
- $= 7000 \text{ वर्ष}$

उदय की अपेक्षा मूल प्रकृतियों की आबाधा

कर्म	उत्कृष्ट आबाधा
दर्शन मोहनीय	7000 वर्ष
चारित्र मोहनीय	4000 वर्ष
ज्ञानावरण-4	3000 वर्ष
नाम-गोत्र	2000 वर्ष

इसी प्रकार से मध्य स्थितियों की आबाधा भी निकालना चाहिए ।

1 को-2 सागर से कम बंध होने पर
कितनी आबाधा होगी ?

अंतोकोडाकोडि-ट्टिदिस्स अंतोमुहुत्तमाबाहा ।
संखेज्जगुणविहीणं, सब्बजहण्णट्टिदिस्स हवे ॥916॥

- अर्थ— अंतःको-2 सागर स्थिति की अन्तर्मुहूर्त आबाधा है।
- सब जघन्य स्थितियों की उससे संख्यातगुणी कम आबाधा होती है ॥916॥

अंतःकोड़ाकोड़ी सागर

- कोड़ा कोड़ी अर्थात्= करोड़ x करोड़
- = 1,00,00,000 x 1,00,00,000
- अंतः अर्थात् 1 करोड़ सागर से ऊपर और 1 कोड़ाकोड़ी सागर से कम
- 1 सागर = 10 कोड़ा कोड़ी पल्य

1 मुहूर्त प्रमाण आबाधा किस स्थिति की?

- 1 दिन के मुहूर्त = 30
- 1 वर्ष के मुहूर्त = $360 \times 30 = 10800$
- 100 वर्ष के मुहूर्त = $100 \times 10800 = 10,80,000$ मुहूर्त
- 10,80,000 मुहूर्त आबाधा है 1 को-2 सागर की,
- तो 1 मुहूर्त आबाधा कितनी स्थिति की होगी ?
- $\frac{1 \text{ को-2 सागर}}{10,80,000 \text{ मुहूर्त}} \times 1 \text{ मुहूर्त}$
- $\frac{10^{14} \text{ सागर}}{10,80,000} = 9,25,92,592 \frac{64}{108} \text{ सागर}$
- अर्थात् इतने सागर प्रमाण तक बंध होने पर 1 मुहूर्त तक की आबाधा होती है।
- इससे कम बंध होने पर अंतर्मुहूर्त की आबाधा प्रारंभ हो जाती है।

1 सागर की आबाधा कितनी ?

- 100 वर्ष के मुहूर्त = 10,80,000
- 1 मुहूर्त के उच्छ्वास = 3,773
- 100 वर्ष के उच्छ्वास = 10,80,000 × 3,773 = 4,07,48,40,000
- 1 को-2 सागर की आबाधा 4,07,48,40,000 उच्छ्वास है,
- तो 1 सागर की आबाधा कितनी उच्छ्वास होगी ?

$$\bullet \frac{4,07,48,40,000 \text{ उच्छ्वास}}{1 \text{ को-2 सागर}} \times 1 \text{ सागर}$$

$$\bullet = \frac{4,07,48,40,000 \text{ उच्छ्वास}}{10^{14}} = \frac{1 \text{ उच्छ्वास}}{\text{संख्यात}}$$

- अर्थात् एक उच्छ्वास का भी संख्यातवाँ भाग 1 सागर की आबाधा है
- इसी प्रकार त्रैराशिक से सब स्थितियों की आबाधा निकालना चाहिए ।

पुष्पाणं कोडितिभागादासंखेप अद्धवो त्ति हवे ।
आउस्स य आबाहा, ण द्विदिपडिभागमाउस्स ॥917॥

- अर्थ— आयुर्कर्म की आबाधा 1 कोटि पूर्व के तीसरे भाग से लेकर असंक्षेपाद्धा प्रमाण अर्थात् जिससे थोड़ा काल कोई न हो ऐसे आवली के असंख्यातवें भाग प्रमाण तक है ।
- आयुर्कर्म की आबाधा स्थिति के अनुसार भाग की हुई नहीं है । अर्थात् जैसे अन्य कर्मों में स्थिति के अनुसार भाग करने से आबाधा का प्रमाण होता है, इस तरह आयुर्कर्म में नहीं है ॥917॥

आयु कर्म की उत्कृष्ट आबाधा

उत्कृष्ट

$$\text{कोटि पूर्व} \times \frac{1}{3}$$

जब कोई कर्मभूमिया 1 कोटि पूर्व की आयु वाला

मनुष्य या तिर्यंच

आयु का $\frac{2}{3}$ बीतने पर

अगली आयु का बंध करता है

तब उसकी शेष बची $\frac{1}{3}$ कोटि पूर्व आयु

अगली आयु हेतु आबाधा रहती है ।

$$\text{कोटि पूर्व} \times \frac{1}{3}$$

$$\text{कोटि पूर्व} \times \frac{2}{3}$$

वर्तमान आयु
1 कोटि पूर्व

असंक्षेपाद्धा

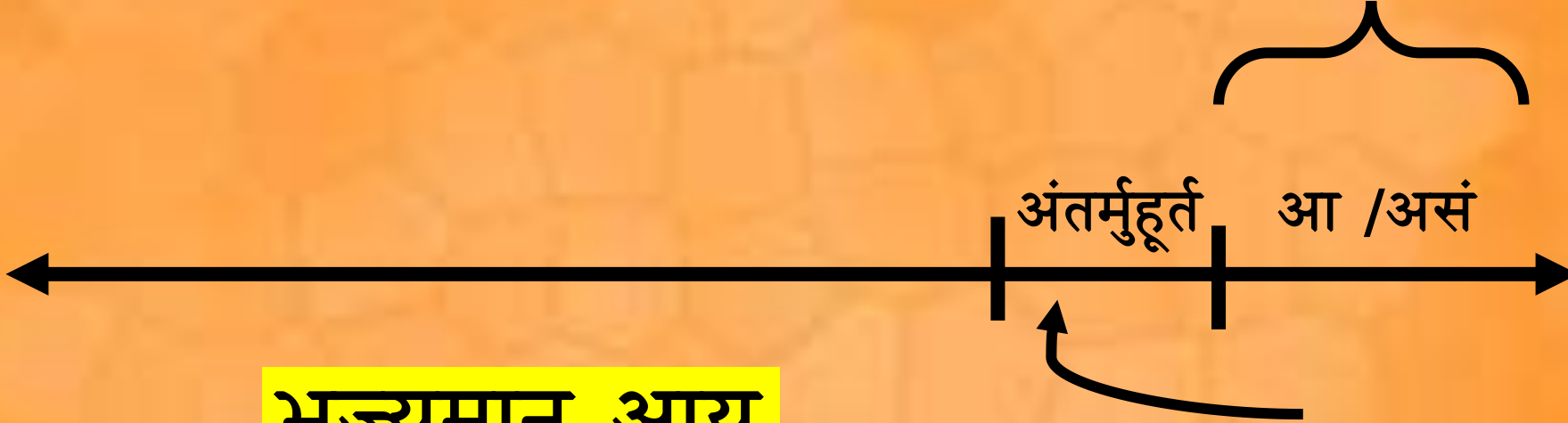
अ + संक्षेप + अद्धा

इससे संक्षेप (हीन) नहीं है आबाधा का अद्धा याने काल ।

अर्थात् इतने काल से कम आयु की आबाधा नहीं होती

अर्थात् इतना मात्र काल शेष रहने पर आयु का बंध होता ही है ।

असंक्षेपाद्धा काल



भुज्यमान आयु

यहाँ आयु का बंध होगा, जिसने अभी तक आयु बंध नहीं किया है।

1 कोटि पूर्व

- 84 लाख × 84 लाख वर्ष = 1 पूर्व
- = 70,56,000 करोड़ वर्ष = 1 पूर्व
- 1 पूर्व × 1 करोड़ = 1 कोटि पूर्व
- 70,56,000 करोड़ करोड़ वर्ष = 1 कोटि पूर्व
- 70,56,000 कोटाकोटि वर्ष = 1 कोटि पूर्व

आयु कर्म की जघन्य आबाधा

संक्षेप = अल्प / थोड़ा; अद्धा = काल;
अ = नहीं है ।


जिससे और अल्प काल आयुकर्म की
आबाधा का नहीं पाया जाता है, उसे
असंक्षेपाद्धा कहते हैं ।

जब किसी अपकर्ष काल में आयु का बंध
नहीं होता, तब मरण के अंतर्मुहूर्त पूर्व आयु
का बंध होता है । उस समय आयु की
जघन्य आबाधा होती है ।

— } असंक्षेपाद्धा
काल

वर्तमान आयु

जघन्य
असंक्षेपाद्धा
(आवली /
असंख्यात) अथवा
अंतर्मुहूर्त



प्रश्न – देव,
नारकी की आयु
33 सागर होती
है। उनकी
आयु का $\frac{2}{3}$
बीतने पर आयु
बंध कराने पर
अधिक आबाधा
प्राप्त होगी?

उत्तर— देव, नारकी को अन्त के 6 माह में ही अगली आयु का बंध होता है। इसलिए उनको उत्कृष्ट आबाधा 6 माह ही होती है।

इसी प्रकार भोगभूमिया मनुष्य, तिर्यंच की उत्कृष्ट आयु यद्यपि 3 पल्य की है, तथापि उनको अगली आयु का बंध 9 मास पूर्व ही होता है, अतः उनकी भी आबाधा 9 मास से अधिक नहीं होती।

इसलिए आयु की उत्कृष्ट आबाधा 1 कोटि पूर्व $\times \frac{1}{3}$ प्रमाण ही है।

आयु कर्म की आबाधा प्रतिभाग अनुसार नहीं निकाली जाती है।

आयु कर्म की आबाधा जितनी भुज्यमान आयु शेष है, उतनी होती है।

आवलियं आबाहो-दीरणमासिज्ज सत्तकम्माणं ।
परभवियआउगस्स य, उदीरणा णत्थि णियमेण ॥918॥

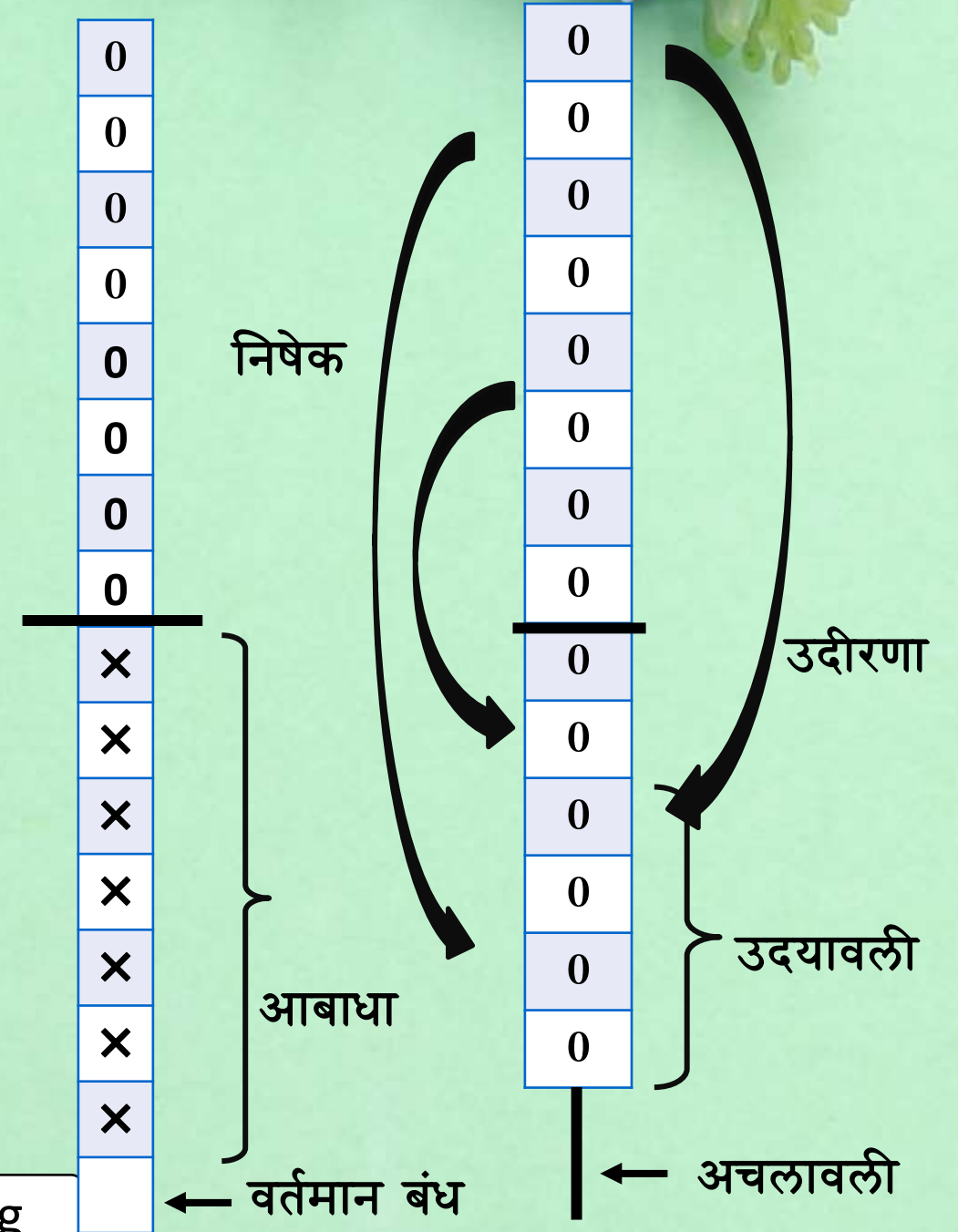
- अर्थ— सात कर्मों की आबाधा उदीरणा की अपेक्षा से एक आवली मात्र है और
- परभव की आयु जो बाँध ली है उसकी उदीरणा नियम से नहीं होती ॥918॥



उदीरणा की अपेक्षा आबाधा

अपक्व कर्म को उदयावली में प्राप्त कराने को उदीरणा कहते हैं ।

कर्म	आबाधा
7 कर्म	1 आवली
आयु कर्म	×



1 आवली आबाधा क्यों ?

क्योंकि बंध समय से 1 आवली प्रमाण काल तक बंधा कर्म अचल रहता है ।

याने उसका उदय, उदीरणा, संक्रमण, अपकर्षण आदि कुछ भी नहीं हो सकता है ।

इस 1 आवली को ही अचलावली कहते हैं ।

इसके पश्चात् ही उदीरणा संभव है ।

अतः उदीरणा की अपेक्षा 1 आवली काल आबाधा कही है ।

आयु कर्म का बंध हो जाने पर अगली आयु की उदीरणा नहीं होती है । इसलिए उदीरणा की अपेक्षा आयु की कोई आबाधा नहीं है ।

इसी से यह फलित होता है कि आयु बंध जाने के बाद जीव का अकालमरण संभव नहीं है ।

आबाहूणियकम्मट्टिदी णिसेगो दु सत्तकम्माणं ।
आउस्स णिसेगो पुण, सगट्टिदि होदि णियमेण ॥919॥

- अर्थ— अपनी-अपनी कर्मों की स्थिति में आबाधा का काल घटाने से जो काल शेष रहे उसके समयों के प्रमाण सात कर्मों के निषेक जानना और
- आयुकर्म के निषेक अपनी-अपनी स्थिति प्रमाण हैं – ऐसा नियम से समझना ॥919॥

प्रतिसमय

जितने कर्मपरमाणु

खिरते हैं,

उन कर्मपरमाणुओं
के समूह को

निषेक कहते हैं ।

निषेक

7 कर्मों के निषेक

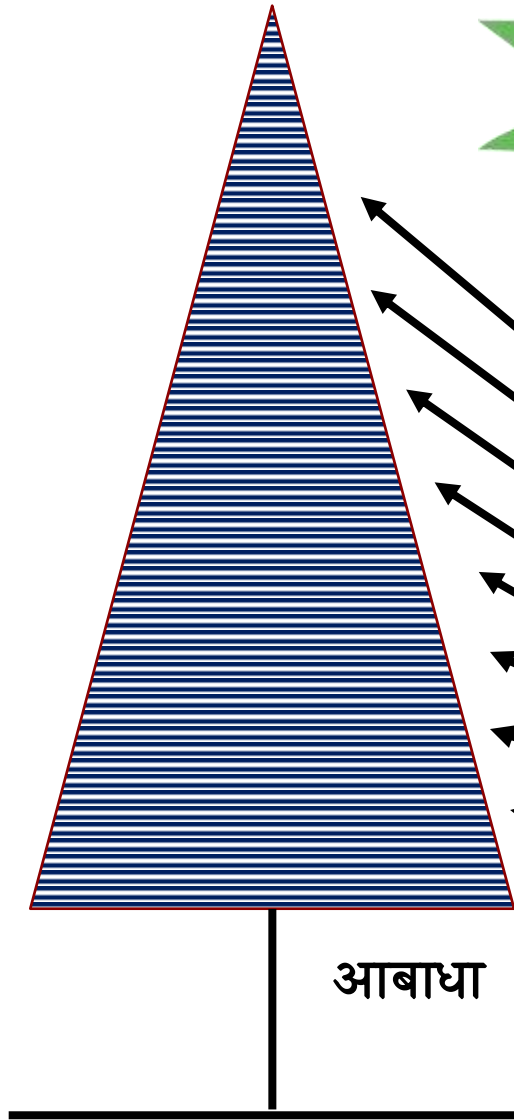
• कर्म-स्थिति – आबाधाकाल

आयुर्कर्म के निषेक

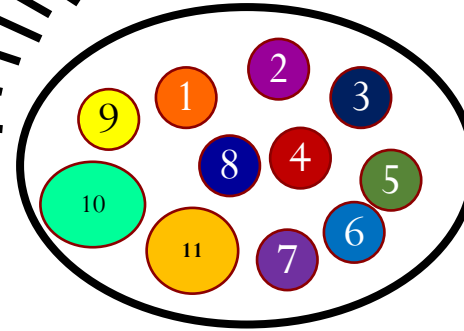
• कर्म-स्थिति प्रमाण

कर्म वर्गणाओं का ग्रहण और निर्जरा

कर्म
स्थिति

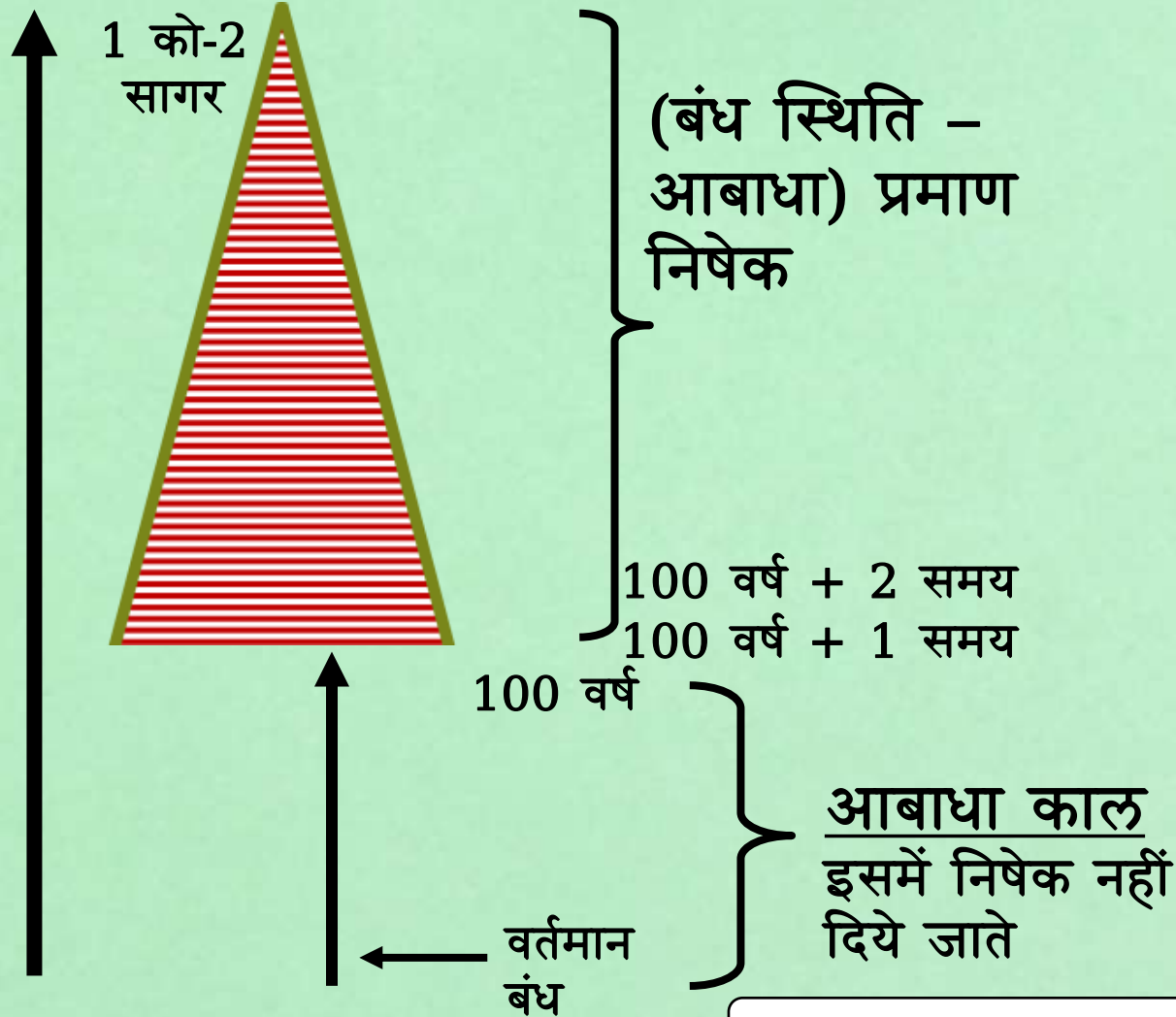


1 स. प्र. की कर्म वर्गणाओं का
पुरी स्थिति में बंटवारा



एक समयप्रबद्ध में ग्रहण
कर्म वर्गणायें

जैसे - किसी ने ज्ञानावरण कर्म 1 को-2 सागर का बांधा,
तो इसके निषेक कितने बनेंगे ?



यहाँ वर्तमान बंध समय से 100 वर्ष प्रमाण तो आबाधा है ।

आबाधा में निषेक नहीं बनाए जाते ।

~~इसके अनंतर स्थिति वाले निषेक से (1 को-2 सागर - 100 वर्ष) प्रमाण तक निषेक बनेंगे ।~~

यह 1 समयप्रबद्ध की अपेक्षा से कहा है ।

जहाँ वर्तमान समयप्रबद्ध की आबाधा है, वहाँ पहले के बद्ध कर्म सत्ता में हैं ही ।

अतः वह स्थान पूर्णतया खाली नहीं है ।

वर्तमान के समयप्रबद्ध में से वहाँ निषेक नहीं दिए हैं, पूर्व के तो हैं ही ।

33 सागर

	0
	0
	0
	0
	0
3	0
2	0
1	0

नवीन आयु के निषेक

0
0
0
0
0
0
0
0

शेष आयु प्रमाण आबाधा है

इस समय नवीन आयु का बंध किया

आयु कर्म की निषेक रचना

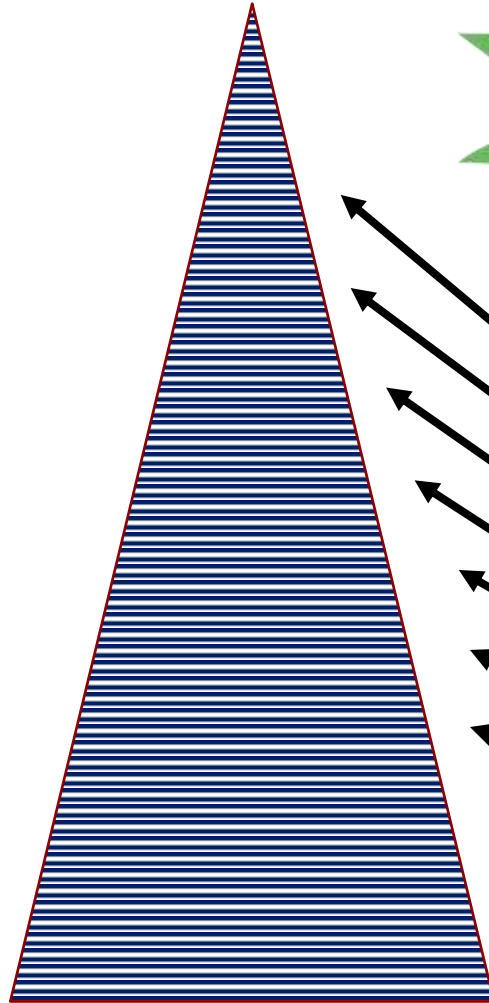
7 कर्मों की आबाधा स्थिति-बंध में शामिल होती है ।

परन्तु आयु कर्म की आबाधा स्थिति-बंध में शामिल नहीं होती ।

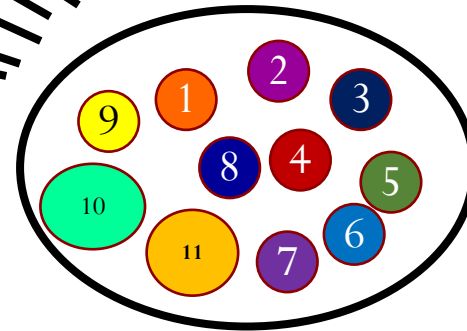
अतः आयु कर्म की जितनी स्थिति बांधी है, उतने पूरे निषेक बनाए जाते हैं ।

नोकर्म वर्गणाओं का ग्रहण और निर्जरा

आयु



1 स. प्र. की नोकर्म वर्गणाओं का पूरी आयु में बंटवारा



एक समयप्रबद्ध में ग्रहण नोकर्म वर्गणायें

आबाहं बोलाविय, पढमणिसेगम्मि देय बहुगं तु ।
तत्तो विसेसहीणं, विदियस्सादिमणिसेगोत्ति ॥920॥

- अर्थ— आबाधा काल को छोड़कर जो अनंतर समय है वहाँ पहली गुणहानि के प्रथम निषेक में बहुत द्रव्य देना ।
- दूसरे निषेक से लेकर दूसरी गुणहानि के प्रथम निषेकपर्यंत विशेष हीन कर्म परमाणु देना चाहिए ॥920॥

बिदिये बिदियणिसेगे, हाणी पुव्विल्लहाणिअद्धं तु ।
एवं गुणहाणिं पडि, हाणी अद्धद्धयं होदि ॥921॥

- अर्थ— द्वितीय गुणहानि के दूसरे निषेक में पहली गुणहानि के चयप्रमाण से आधा चय घटाना चाहिए । इतने ही चय तीसरी गुणहानि के पहले निषेक तक घटाना चाहिए ।
- इसी प्रकार तीसरी आदि गुणहानि के दूसरे निषेक से लेकर चौथी आदि सब गुणहानियों में क्रम से आधा-आधा चय होते हैं और कर्म द्रव्य भी क्रमशः कम-कम प्राप्त होता है ॥921॥



द्वट्टिदिगुणहाणी-णद्धाणं दलसला णिसेयच्छिदी ।
अण्णोण्णगुणसलावि य, जाणेज्जो सव्वठ्ठिदिरयणे ॥922॥

- अर्थ – सब कर्मों की स्थिति की रचना में द्रव्य, स्थिति आयाम, गुणहानि आयाम, नाना गुणहानि, निषेकहार अर्थात् दो गुणहानि और अन्योन्याभ्यस्त राशि – ये छह राशियाँ जानना चाहिये ॥922॥



कर्म स्थिति रचना जानने के लिए 6 राशियां

द्रव्य

जो कर्मरूप परिणत पुद्गल द्रव्य का प्रमाण (संख्या) है, वह द्रव्य राशि है। जैसे एक समय में अभव्य जीवराशि \times अनंत या $\frac{\text{सिद्ध राशि}}{\text{अनंत}}$ प्रमाण परमाणु बंधते हैं। यही प्रमाण द्रव्य कहलाता है।

स्थिति-आयाम

पूर्वोक्त एक समय में बद्ध कर्म की स्थिति का प्रमाण स्थिति आयाम कहलाता है। जैसे मिथ्यात्व कर्म 70 कोड़ाकोड़ी सागर प्रमाण बांधा, तो उस समयप्रबद्ध का स्थिति आयाम 70 कोड़ाकोड़ी सागर है।

गुणहानि

गुणाकाररूप हीन-हीन द्रव्य जिसमें पाया जाता है ऐसे निषेकों के समूह का नाम गुणहानि है।

गुणहानि
आयाम

गुणहानि में जो निषेकों की संख्या है, उसे गुणहानि आयाम कहते हैं।

कर्म स्थिति रचना जानने के लिए 6 राशियां

नाना गुणहानि

बांधे गए समयप्रबद्ध की स्थिति में जितनी गुणहानियां पायी जाती हैं, उतनी गुणहानियों के प्रमाण को नाना गुणहानि कहते हैं।

निषेकहार

(गुणहानि आयाम \times 2) को निषेकहार कहते हैं।

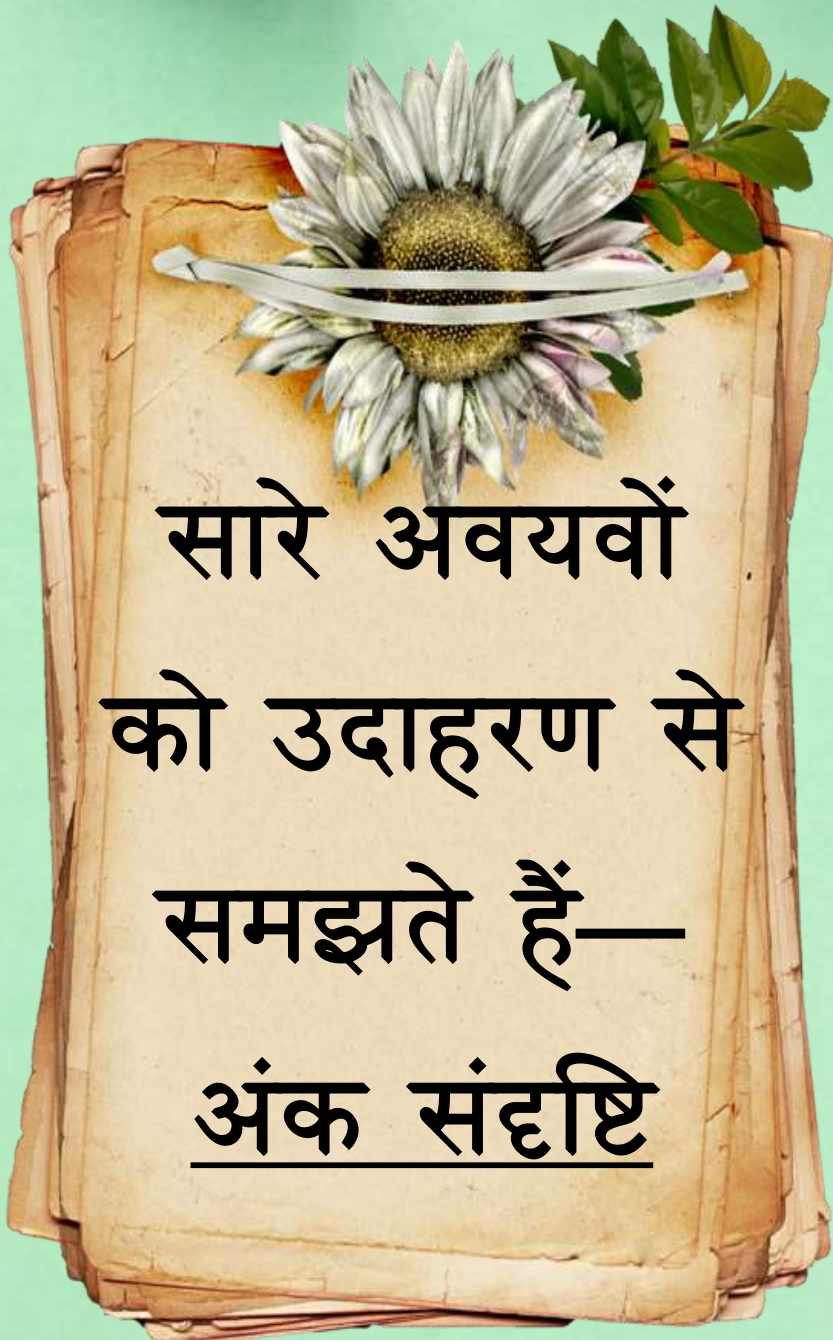
अन्योन्याभ्यस्त
राशि

अन्योन्य + अभ्यस्त = परस्पर में गुणा करना। जितनी नाना गुणहानियों की संख्या है, उतने बार 2 को रखकर परस्पर में गुणा करने पर जो लब्ध आता है, वह अन्योन्याभ्यस्त राशि कहलाती है। (गाथा 937)

तेवद्विं च सयाइं, अडदाला अट्टु छक्क सोलसयं ।
चउसद्विं च विजाणे, दव्वादीणं च संदिट्ठी ॥923॥

- अर्थ – इन द्रव्यादिकों के अंकों की संदृष्टि क्रम से द्रव्य 6300, स्थिति 48, गुणहानि आयाम 8, नानागुणहानि 6, दो-गुणहानि 16, अन्योन्याभ्यस्त-राशि 64 जानना चाहिये ॥923॥





सारे अवयवों
को उदाहरण से
समझते हैं—
अंक संदृष्टि

द्रव्य

• 6300

स्थिति

• 48

गुणहानि आयाम

• 8

नाना गुणहानि

• $\frac{\text{स्थिति}}{\text{गुणहानि आयाम}} = \frac{48}{8} = 6$

निषेकहार

• $8 \times 2 = 16$

अन्योन्याभ्यस्त राशि

• $2^6 = 64$

द्वं समयप्रबद्धं, उत्तपमाणं तु होदि तस्सेव ।
जीवसहत्थणकालो, ठिदिअद्धा संखपल्लमिदा ॥924॥

- अर्थ—द्रव्य तो पहले प्रदेश-बंधाधिकार में कहे हुए समयप्रबद्ध के प्रमाण है, और
- उस समयप्रबद्ध का जीव के साथ स्थित रहने का काल स्थिति आयाम है। वह स्थिति संख्यात पल्यप्रमाण है ॥924॥



समयप्रबद्ध

स्वरूप

- 5 वर्ण, 2 गंध, 5 रस, शीत-उष्ण, स्निग्ध-रूक्ष से परिणत

प्रमाण

- $\frac{\text{सिद्ध राशि}}{\text{अनंत}}$ अथवा अभव्य राशि \times अनंत

परिभाषा

- समय-समय प्रति बध्यते इति समयप्रबद्धं ।
- जो प्रत्येक समय जीव के साथ बंधता है, उसे समयप्रबद्ध कहते हैं ।
- समयप्रबद्ध का जीव के साथ स्थित रहने का काल

स्थिति

स्थिति आयाम है। वह स्थिति संख्यात पल्यप्रमाण है

द्रव्य और स्थिति की वास्तविक राशियां

द्रव्य

जो समयप्रबद्ध जघन्य, मध्यम, उत्कृष्ट बांधा है, वही यहां वास्तविक द्रव्य का प्रमाण है ।

स्थिति

पूर्वोक्त समयप्रबद्ध जितने काल तक जीव के साथ अवस्थानरूप रहता है, ऐसे कोड़ाकोड़ी सागर आदि अथवा संख्यात पल्य के समयों का प्रमाण स्थिति है ।

मिच्छे वग्गसलायप्पहुडिं पल्लस्स पढममूलोत्ति ।
वग्गहदी चरिमो तच्छिदिसंकलिदं चउत्थो य ॥925॥

- अर्थ—मिथ्यात्व कर्म में पल्य की वर्गशलाका को आदि लेकर पल्य के प्रथम मूलपर्यंत उन वर्गों का आपस में गुणा करने से चरमराशि अर्थात् अन्योन्याभ्यस्त राशि का प्रमाण होता है
- उनकी अर्धच्छेद राशियों को संकलित अर्थात् जोड़ने से चौथी राशि अर्थात् नानागुणहानि का प्रमाण होता है ॥925॥



वर्गशलाकेणवह्निद-पल्लं अण्णोण्णगुणिदरासी हु ।
णाणागुणहाणिसला, वर्गशलच्छेदणूणपल्लच्छिदी ॥926॥

- अर्थ—इस प्रकार पल्य की वर्गशलाका का भाग पल्य में देने से अन्योन्याभ्यस्त राशि का प्रमाण होता है और
- पल्य की वर्गशलाका के अर्धच्छेदों को पल्य के अर्धच्छेदों में घटाने से जो प्रमाण आवे उतनी नानागुणहानि राशि जाननी चाहिये ॥926॥

मिथ्यात्व की अन्योन्याभ्यस्त राशि

सारे कर्मों के गुणहानि आयाम और दो गुणहानि तो सदृश है । परन्तु नाना गुणहानि और अन्योन्याभ्यस्त राशि असमान है । यहां पहले मिथ्यात्व के गुणहानि आयाम को निकालते हैं । उसके आधार से अन्य कर्मों की गुणहानि भी निकालेंगे ।

पल्य की वर्गशलाका से लेकर $\sqrt{प}$ के वर्गधारा के स्थानों को एक पंक्ति में लिखें ।

दूसरी पंक्ति में इसके छेद लिखें ।

तीसरी पंक्ति में इसकी वर्गशलाका लिखें ।

वर्गशलाका (तीसरी पंक्ति)	अर्धच्छेद (द्वितीय पंक्ति)	राशि (प्रथम पंक्ति)
वर्गशलाका की वर्गशलाका	वर्गशलाका के छे	वर्गशलाका
वर्गशलाका की वर्गशलाका+1	वर्गशलाका के छे × 2	(वर्गशलाका) ²
वर्गशलाका की वर्गशलाका+2	वर्गशलाका के छे × 4	(वर्गशलाका) ⁴
⋮	⋮	⋮
पल्य की वर्गशलाका - 1	छे/2	$\sqrt{प}$

इसमें पल्य की वर्गशलाका से लेकर $\sqrt{प}$ तक के स्थानों का (प्रथम पंक्ति का) जो गुणकार है, वह मिथ्यात्व कर्म की कर्मस्थिति की अन्योन्याभ्यस्त राशि है ।

इसे गुणा करने पर -

$$\text{वर्गशलाका} \times (\text{वर्गशलाका})^2 \times (\text{वर्गशलाका})^4 \times \dots \times \sqrt[4]{प} \times \sqrt{प}$$

$$= \frac{प}{\text{वर्गशलाका}}$$

उदाहरण - माना कि पल्य = 65536,
तो 3 पंक्तियां इस प्रकार बनेगी -

वर्गशलाका (तीसरी पंक्ति)	अर्धच्छेद (द्वितीय पंक्ति)	राशि (प्रथम पंक्ति)
1	2	4
2	4	16
3	8	256
4	16	65536

प्रथम पंक्ति के स्थानों में 4 से 256 तक का परस्पर गुणा करने पर

$$4 \times 16 \times 256 = ?$$

$$\text{सूत्र} = \frac{(\text{अंतिम स्थान})^2}{\text{प्रथम स्थान}} = \frac{(256)^2}{4} = \frac{65536}{4} = 16384$$

$$\text{अतः} \frac{(\text{अंतिम स्थान})^2}{\text{प्रथम स्थान}} = \frac{(\sqrt{प})^2}{\text{वर्गशलाका}} = \frac{प}{\text{वर्गशलाका}}$$

नाना गुणहानि का प्रमाण

द्वितीय पंक्ति के प्रथम स्थान से \sqrt{p} के छेद स्थान तक का जोड़ मिथ्यात्व कर्म की उत्कृष्ट स्थिति की गुणहानि की संख्या याने नाना गुणहानि है ।

वर्गशलाका के छे. + (वर्गशलाका छे \times 2) + (वर्गशलाका छे. \times 4) + + \sqrt{p} के छेद

$$\text{सूत्र} = \frac{(\text{अंतिम संख्या} \times \text{गुणकार}) - \text{प्रथम संख्या}}{\text{गुणकार} - 1}$$

$$\frac{(\text{छे} \times 2) - \text{वर्गशलाका के छेद}}{2-1} = \text{छे} - \text{वर्गशलाका के छेद (यह नाना गुणहानि का प्रमाण है।)}$$

पूर्वोक्त उदाहरण में $2+4+8 =$ नाना गुणहानि होती है । इसी को सूत्र से निकालते हैं—

$$16 - 4 \text{ के छेद} = 16 - 2 = 14$$



अन्योन्याभ्यस्त राशि

इन्हीं नाना गुणहानि प्रमाण 2 को परस्पर रखकर गुणा करने पर भी अन्योन्याभ्यस्त राशि आती है, जो प्रथम पंक्ति के आधार से निकाली थी ।

अन्योन्याभ्यस्त राशि = $2^{\text{नाना गुणहानि}}$

= $2^{\text{छे-वर्गशलाका के छेद}}$

घात के नियमों के अनुसार = $a^{m-n} = \frac{a^m}{a^n}$

$\frac{2^{\text{छे}}}{2^{\text{वर्गशलाका के छेद}}} = \frac{\text{पल्य}}{\text{वर्गशलाका}}$

उदाहरण में $\frac{65536}{4} = 16384$

सर्वसलायाणं जदि, पयदणिसेये लहेज्ज एक्कस्स ।
किं होदित्ति णिसेये, सलाहिदे होदि गुणहाणी ॥927॥

- अर्थ—सब नानागुणहानि शलाकाओं के यदि पूर्वोक्त स्थिति प्रमाण निषेक होते हैं
- तो 1 गुणहानि शलाका के कितने निषेक होने चाहिये?
- इस प्रकार त्रैराशिकगणित के अनुसार निषेकों में शलाकाओं का भाग देने से जो प्रमाण हो, वह गुणहानि आयाम का प्रमाण होता है ॥927॥



गुणहानि आयाम का प्रमाण

यदि (छे - वर्गशलाका के छे.) प्रमाण नाना गुणहानि 70 कोड़ाकोड़ी सागर की हैं,

जैसे 6 गुणहानियां हैं 48 समय की स्थिति में,

तो 1 गुणहानि कितने आयाम के लिए होगी?

तो 1 गुणहानि का समय/आयाम होगा -

$$\frac{70 \text{ कोड़ाकोड़ी सागर}}{\text{छे - वर्गशलाका के छेद}} = \frac{\text{संख्यात पल्य}}{\text{छे - वर्गशलाका के छे.}}$$

$$\frac{48}{6} \times 1 = 8$$

$$= \frac{\text{पल्य}}{\text{असंख्यात}}$$

$$\text{सूत्र} = \frac{\text{स्थिति}}{\text{नाना गुणहानि}}$$

दोगुणहाणिपमाणं, णिसेयहारो दु होइ तेण हिदे ।
इद्वे पढमणिसेये, विसेसमागच्छदे तत्थ ॥928॥

- अर्थ—गुणहानि का दूना प्रमाण निषेकहार होता है ।
- उसका भाग विवक्षित गुणहानि के पहले निषेक में देने से उस गुणहानि में विशेष (चय) का प्रमाण आता है ॥928॥





निषेकहार

दो गुणहानि = $2 \times$ गुणहानि

इसे ही निषेकहार कहते हैं ।

प्रयोजन = $\frac{\text{गुणहानि का प्रथम निषेक}}{\text{निषेकहार}} = \text{चय}$

आदि निषेक में 2 गुणहानि आयाम प्रमाण चय होते हैं ।

याने आदि निषेक = निषेकहार \times चय

जैसे $512 = 16 \times 32$

रूऊणण्णोण्णभत्थवहिददब्बं च चरिमगुणदब्बं ।
होदि तदो दुगुणकमो, आदिमगुणहाणिदब्बोत्ति ॥929॥

- अर्थ—1 कम अन्योन्याभ्यस्त राशि का भाग सब द्रव्य में देने से अंतगुणहानि का द्रव्य होता है और
- इससे दूना-दूना पहली गुणहानि के द्रव्य तक द्रव्य जानना चाहिये ॥929॥



$$\text{अंतिम गुणहानि का द्रव्य} = \frac{\text{सर्वद्रव्य}}{\text{अन्योन्याभ्यस्तराशि} - 1}$$

द्विचरम गुणहानि का द्रव्य इससे दुगुणा होता है ।

द्विचरम से त्रिचरम गुणहानि का द्रव्य दुगुणा होता है ।

इसी प्रकार प्रथम गुणहानि तक द्रव्य दुगुणा-दुगुणा होता है ।

$$\text{उदाहरण में अंतिम गुणहानि का द्रव्य} = \frac{6300}{64 - 1} = \frac{6300}{63} = 100$$

द्विचरम आदि गुणहानियों का द्रव्य इससे दुगुणा है। अतः पहली गुणहानि से दूसरी गुणहानि का द्रव्य 2 गुणा हीन है । इसलिए इसे गुणहानि कहा जाता है ।

गुणहानि

गुणहानि	द्रव्य
छठी	100
पांचवीं	200
चतुर्थ	400
तीसरी	800
दूसरी	1600
पहली	3200
कुल द्रव्य	6300

रूऊणद्धाणद्धे-णूणेण णिसेयभागहारेण ।
हदगुणहाणिविभजिदे, संगसगदव्वे विसेसा हु ॥930॥

- अर्थ—एक कम गुणहानि आयाम के प्रमाण को आधा करके निषेक भागहार में घटाने से जो प्रमाण आवे
- उससे विवक्षित गुणहानि आयाम को गुणने से जो प्रमाण हो उसका भाग अपनी-अपनी गुणहानि के द्रव्य में देने पर विशेष (चय) का प्रमाण होता है ॥930॥



चय का सूत्र

$$\text{चय} = \frac{\text{गुणहानिका द्रव्य}}{\text{गुणहानि} \times \left(\text{निषेकहार} - \frac{\text{गुणहानि} - 1}{2} \right)}$$

जैसे प्रथम गुणहानि का द्रव्य = 3200, गुणहानि आयाम = 8, निषेकहार = 16 है।

$$\text{चय} = \frac{3200}{8 \times \left(16 - \frac{8-1}{2} \right)} = \frac{3200}{8 \times (16 - 3.5)}$$

$$= \frac{3200}{8 \times 12.5} = \frac{400}{12.5} = 32$$

ऐसे ही द्वितीय आदि गुणहानियों का चय निकाला जा सकता है।

$$\frac{1600}{8 \times 12.5} = 16 \text{ द्वितीय गुणहानि का चय}$$

$$\frac{800}{8 \times 12.5} = 8 \text{ तृतीय गुणहानि का चय}$$

पचयस्स य संकलणं, सगसगगुणहाणिदव्वमज्झम्मि ।
अवाणिय गुणहाणिहिदे, आदिपमाणं तु सव्वत्थ ॥931॥

- अर्थ - सब चयधन को अपने-अपने गुणहानि के सब द्रव्य में से घटा के जो प्रमाण हो उसमें गुणहानि आयाम का भाग देने से जो संख्या आवे वह आदि का अर्थात् अन्त के निषेक का प्रमाण सब जगह होता है ॥931॥



प्रचयधन

प्रथम गुणहानि

अंतिम निषेक

अंतिम निषेक + 1 चय

अंतिम निषेक + 2 चय

अंतिम निषेक + 3 चय

अंतिम निषेक + 4 चय

अंतिम निषेक + 5 चय

अंतिम निषेक + 6 चय

अंतिम निषेक + 7 चय

एक गुणहानि में जितने चय हैं, उन सबके जोड़ को प्रचयधन कहते हैं।

$$\text{प्रचयधन} = \frac{\text{गच्छ}-1}{2} \times \text{चय} \times \text{गच्छ}$$

$$\text{गुणहानि आयाम} = \text{गच्छ} = 8$$

$$\text{प्रचयधन} = \frac{8-1}{2} \times 8 \times 32 = 7 \times 4 \times 32 = 896$$

यह प्रथम गुणहानि का चयधन है।



आदिधन

गुणहानि के द्रव्य में से प्रचयधन घटाने पर आदिधन होता है ।

गुणहानि द्रव्य – प्रचयधन = आदिधन

$$3200 - 896 = 2304$$

(अंतिम निषेक \times गुणहानि आयाम) का प्रमाण आदिधन है ।

याने चय को छोड़कर प्रत्येक निषेक में समानरूप से पाये जाने वाले द्रव्य के समूह को आदिधन कहते हैं ।

$$\frac{\text{आदिधन}}{\text{गुणहानि आयाम}} = \text{अंतिम निषेक}$$

$$\frac{2304}{8} = 288$$

इस अंतिम निषेक में एक-एक चय जोड़ने पर विवक्षित गुणहानि के सर्व निषेक प्राप्त होते हैं ।

गुणहानि के प्रथम निषेक से अंतिम निषेक तक 1-1 चय घटता जाता है। यहाँ जो 'आदि' निकाला है, उसमें चय जोड़ते हुये प्रथम निषेक तक आते हैं । इसलिये यह आदि यहाँ वास्तव में अंतिम निषेक है।

आदि

288

288 + 32

288 + 32 + 32

288 + 32 + 32 + 32

288 + 32 + 32 + 32 + 32

288 + 32 + 32 + 32 + 32 + 32

288 + 32 + 32 + 32 + 32 + 32 + 32

288 + 32 + 32 + 32 + 32 + 32 + 32 + 32

इसी प्रकार प्रत्येक गुणहानि का चय, आदि निषेक आदि निकाला जाता है ।

समयप्रबद्ध का बँटवारा - अंकसंदृष्टि

- समयप्रबद्ध = 6300 परमाणु
- स्थिति = 48
- गुणहानि आयाम = 8

निषेक रचना

पद	सूत्र	संख्या
नाना गुणहानि	$\frac{\text{स्थिति}}{\text{गुणहानि आयाम}}$	$\frac{48}{8} = 6$
अन्योन्याभ्यस्त राशि	$2^{\text{नाना गुणहानि}}$	$2^6 = 64$
निषेकहार	$2 \times \text{गुणहानि आयाम}$	$2 \times 8 = 16$

$$\text{अंतिम गुणहानि का द्रव्य} = \frac{\text{समयप्रबद्ध}}{\text{अन्योन्याभ्यस्त राशि} - 1}$$

$$= \frac{6300}{64 - 1} = \frac{6300}{63} = 100$$

पूर्व की गुणहानियों का द्रव्य इससे दुगुना-दुगुना है, अतः

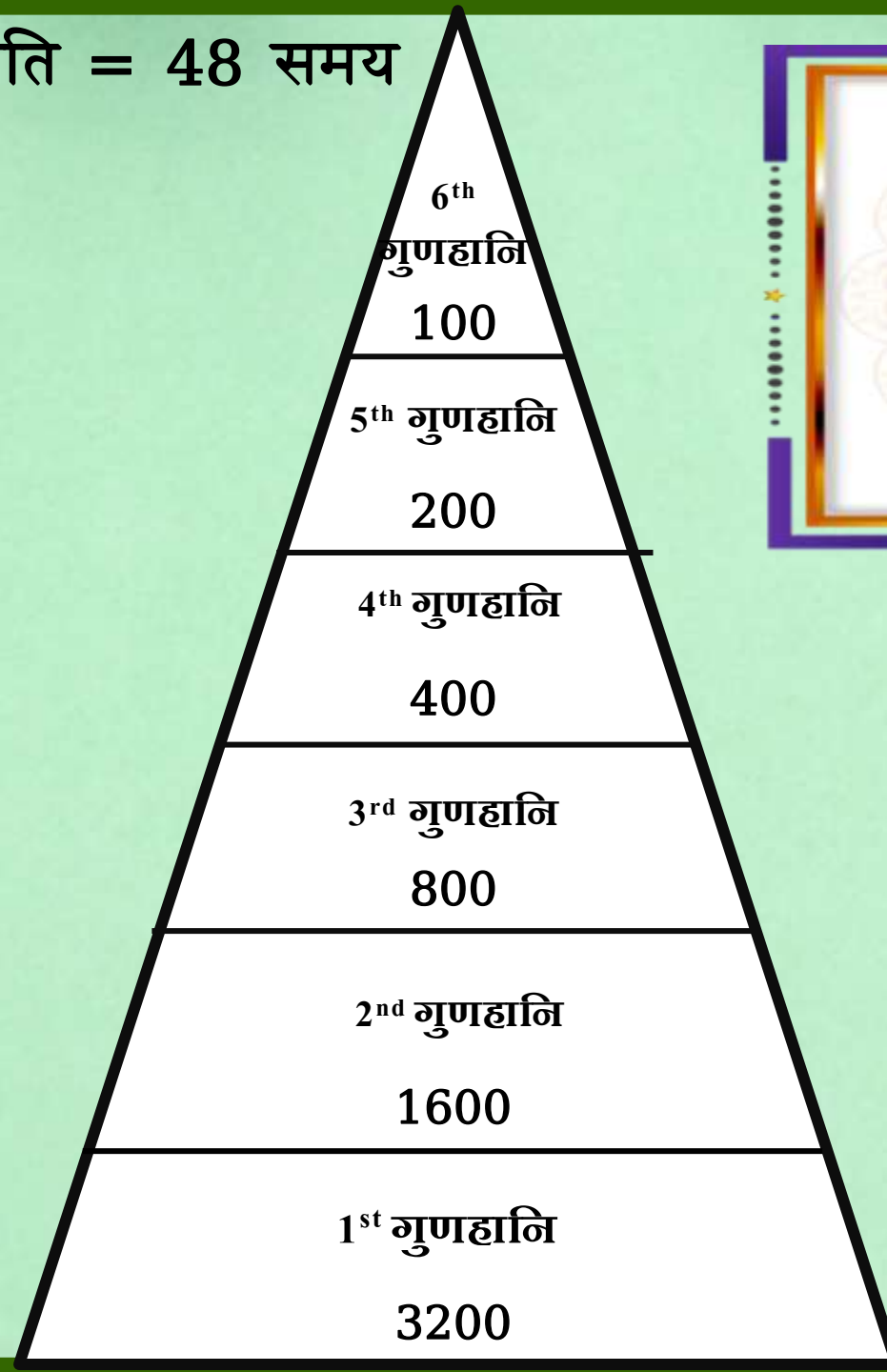
पाँचवी गुणहानि का द्रव्य	200
चतुर्थ गुणहानि का द्रव्य	400
तीसरी गुणहानि का द्रव्य	800
द्वितीय गुणहानि का द्रव्य	1600
प्रथम गुणहानि का द्रव्य	3200

समयप्रबद्ध
का
बँटवारा -
अंकसंदृष्टि

समयप्रबद्ध =
6300 परमाणु

नाना गुणहानि = 6

स्थिति = 48 समय



इस प्रकार प्रथम
गुणहानि से अंतिम
गुणहानि तक द्रव्य
आधा-आधा होता है ।

गुणहानि आयाम = 8 समय

प्रथम गुणहानि

सर्वधन – चयधन = आदिधन

प्रथम गुणहानि के सर्व-द्रव्य का प्रमाण = 3200

$$3200 - 896 = 2304$$

$$\text{अंतिम निषेक} = \frac{\text{आदिधन}}{\text{गुणहानि}}$$

$$= \frac{2304}{8} = 288$$

इस निषेक से अगले निषेक एक-एक चय अधिक हैं। अतः प्रथम गुणहानि इस प्रकार प्राप्त होगी →

	प्रथम गुणहानि
8 th निषेक	288
7 th निषेक	320
6 th निषेक	352
5 th निषेक	384
4 th निषेक	416
3 rd निषेक	448
2 nd निषेक	480
1 st निषेक	512

द्वितीय गुणहानि

प्रथम गुणहानि के अंतिम निषेक से एक चय और घटाने पर
द्वितीय गुणहानि का प्रथम निषेक आता है। $(288 - 32$
 $= 256)$

प्रथम गुणहानि से आगे-आगे की गुणहानियों में चय आधा-
आधा होता जाता है। अतः द्वितीय गुणहानि का चय $= \frac{32}{2}$
 $= 16$

अतः द्वितीय गुणहानि इस प्रकार होगी →

द्वितीय
गुणहानि

144

160

176

192

208

224

240

256

द्वितीय गुणहानि के सर्व-द्रव्य का प्रमाण = 1600

शेष गुणहानियाँ भी इसी प्रकार निकालना

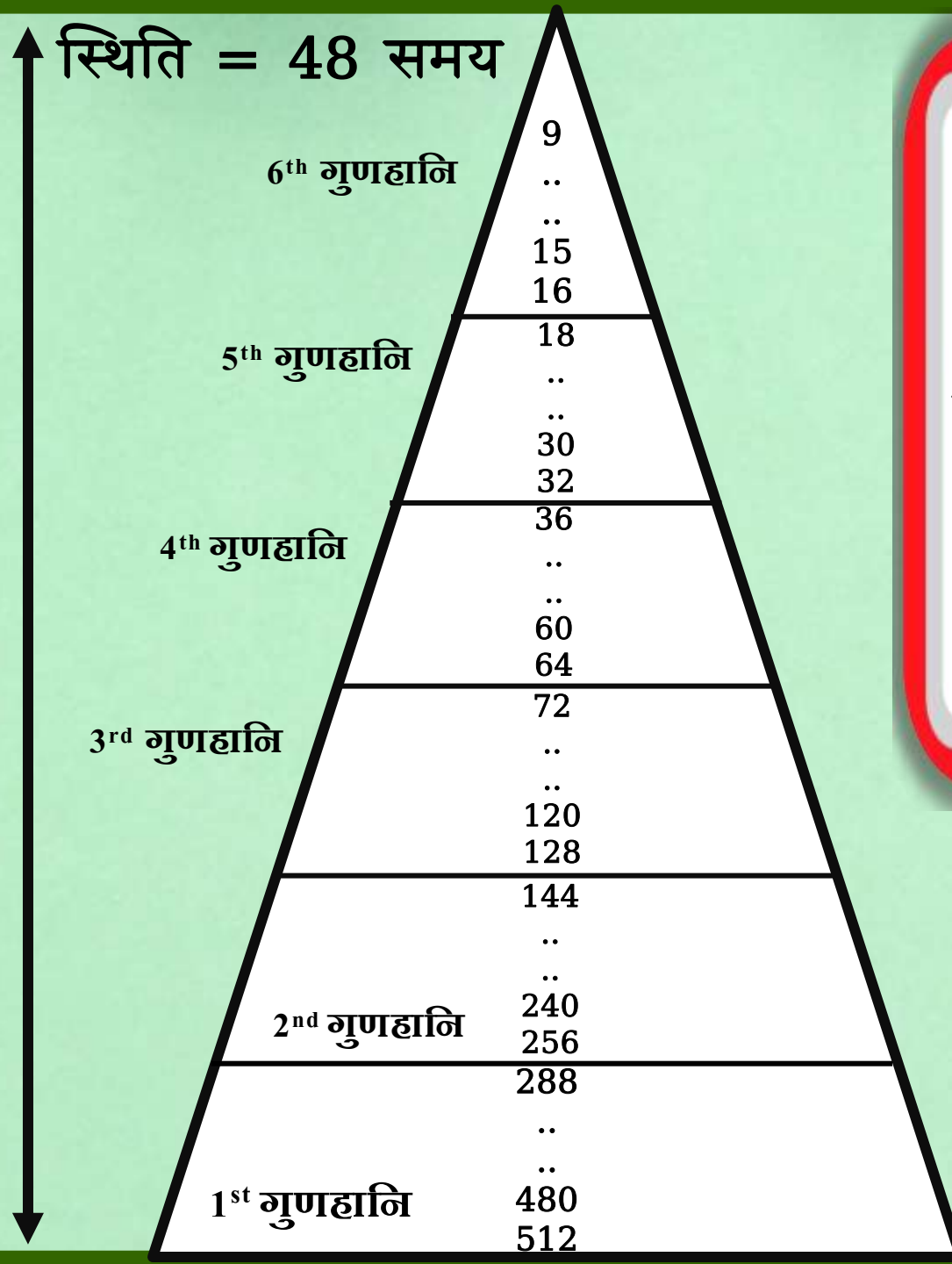
1 st गुणहानि	2 nd गुणहानि	3 rd गुणहानि	4 th गुणहानि	5 th गुणहानि	6 th गुणहानि
288	144	72	36	18	9
320	160	80	40	20	10
352	176	88	44	22	11
384	192	96	48	24	12
416	208	104	52	26	13
448	224	112	56	28	14
480	240	120	60	30	15
512	256	128	64	32	16

समयप्रबद्ध
का
बँटवारा -
अंकसंदृष्टि

समयप्रबद्ध =
6300 परमाणु


नाना गुणहानि = 6

स्थिति = 48 समय



इस प्रकार प्रथम
निषेक से अंतिम
निषेक तक द्रव्य
घटता हुआ जाता है ।
इसलिए नीचे से ऊपर
तक घटता क्रम
दिखाया जाता है ।

गुणहानि आयाम = 8 समय



(वास्तविक
गणित में)
**द्रव्य का
प्रमाण**

जघन्य समयप्रबद्ध = स

जघन्य समयप्रबद्ध से उत्कृष्ट समयप्रबद्ध असंख्यात गुणा है क्योंकि जघन्य योग से उत्कृष्ट योग असंख्यात गुणा है । योग के अनुसार ही समयप्रबद्ध बढ़ता-घटता है ।

उत्कृष्ट समयप्रबद्ध = स ०

इसे बध्यमान 7 मूल कर्मों में बांटने पर मोहनीय का द्रव्य = $\frac{स ०}{7}$

सर्वघाती का द्रव्य अनंतवां भाग होता है । अतः सर्वघाती द्रव्य = $\frac{स ०}{7|ख}$

मोहनीय का सर्वघाती द्रव्य 17 प्रकृतियों में जाता है । अतः सर्वघाती मिथ्यात्व का द्रव्य = $\frac{स ०}{7|ख|17}$

यह एक समयप्रबद्ध के मिथ्यात्व द्रव्य का प्रमाण है ।

गुणहानियों का द्रव्य

स्थिति = 70 कोड़ाकोड़ी सागर = संख्यात पल्य

नाना गुणहानि = छे - वर्गशलाका के छेद

अन्योन्याराशि = $2^{\text{छे-वर्गशलाका के छेद}} = \frac{\text{पल्य}}{\text{पल्य की वर्गशलाका}}$ इसको संदृष्टि में अ लिखते हैं ।

अंतिम गुणहानि का द्रव्य = $\frac{\text{सर्व द्रव्य}}{\text{अन्योन्याभ्यस्त}_{-1}} = \frac{स a}{7|ख|_{17 \times (अ-1)}}$

द्विचरम गुणहानि का द्रव्य = $\frac{स a}{7|ख|_{17 \times (अ-1)}} \times 2$

प्रथम गुणहानि का द्रव्य = अंतिम गुणहानि का द्रव्य $\times \frac{\text{अन्योन्याभ्यस्त राशि}}{2} = \frac{स a}{7|ख|_{17 \times (अ-1)}} \times \frac{अ}{2}$



$$\text{गुणहानि का चय} = \frac{\text{गुणहानिद्वय}}{\text{गुणहानि} \times \left(2 \text{ गुणहानि} - \frac{\text{गुणहानि} - 1}{2}\right)}$$

निषेकहार = $2 \times$ गुणहानि होता है। इसलिए यहां 2 गुणहानि लिखा है।

$$2 \text{ गुणहानि} - \frac{\text{गुणहानि} - 1}{2}$$

$$= \frac{4 \text{ गुणहानि} - (\text{गुणहानि} - 1)}{2} = \frac{4 \text{ गुणहानि} - \text{गुणहानि} + 1}{2}$$

$$= \frac{3 \text{ गुणहानि} + 1}{2}$$

$$\text{चय} = \frac{\text{स } \theta}{7|\text{ख}|17|(\text{अ} - 1)} \times \frac{\text{अ}}{2} \times \frac{1}{\text{गुणहानि} \times \frac{(3 \text{ गुणहानि} + 1)}{2}}$$

यह प्रथम गुणहानि का चय है।

प्रत्येक गुणहानि के चय की संदृष्टि

इसी प्रकार प्रत्येक गुणहानि
के द्रव्य में $गु \times \frac{गु^{3+1}}{2}$
का भाग देने पर चय का
प्रमाण आता है।

गुणहानि	चय
अंतिम गुण	$\frac{स०}{7 17 ख \times (अ - 1) \times गु \times \frac{गु^{3+1}}{2}}$
द्विचरम गुण	$\frac{स० \times 2}{7 17 ख \times (अ - 1) \times गु \times \frac{गु^{3+1}}{2}}$
⋮	⋮
द्वितीय गुण	$\frac{स० \times अ}{7 ख 17 \times (अ - 1) \times 2 \times 2 गु \times \frac{गु^{3+1}}{2}}$
प्रथम गुण	$\frac{स० \times अ}{7 ख 17 \times (अ - 1) \times 2 \times गु \times \frac{गु^{3+1}}{2}}$

प्रथम, अंतिम निषेक की संदृष्टि

प्रथम निषेक में 2 गुणहानि प्रमाण चय होते हैं । अतः प्रथम गुणहानि

$$\text{का प्रथम निषेक} = \frac{\text{स } a \times 3a}{7|\text{ख}|17 \times (3a-1) \times 2 \times \text{गु} \times \frac{\text{गु}^{3+1}}{2}} \times 2 \text{ गु}$$

गुणहानि के अंतिम निषेक में (गुणहानि +1) प्रमाण चय होते हैं । अतः

$$\text{प्रथम गुणहानि का अंतिम निषेक} = \frac{\text{स } a \times 3a}{7|\text{ख}|17 \times (3a-1) \times 2 \times \text{गु} \times \frac{\text{गु}^{3+1}}{2}} \times$$

(गु+1)

सव्वासिं पयडीणं, णिसेयहारो य एयगुणहाणी ।
सरिसा हवंति णाणा-गुणहाणिसलाओ वोच्छामि ॥932॥

- अर्थ—सब मूल-उत्तर प्रकृतियों का निषेकहार और एक गुणहानि आयाम – ये दोनों तो समान ही होते हैं और
- नानागुणहानि शलाका समान नहीं हैं; इस कारण उनको कहता हू ॥932॥



सर्व प्रकृतियों का गुणहानि आयाम और निषेकहार समान है ।

नाना गुणहानि स्थिति के अनुसार होती है, इसलिए समान नहीं है ।

जैसे स्थिति 48 समय की है, तो नाना गुणहानि $\frac{48}{8} = 6$ होगी ।

यदि स्थिति 40 समय है, तो नाना गुणहानि $\frac{40}{8} = 5$ होगी ।

नाना गुणहानि के अनुसार अन्योन्याभ्यस्त राशि भी असमान होगी ।

समयप्रबद्ध भी योग के अनुसार हीनाधिक होता है । अतः अब सब प्रकृतियों की स्थिति के अनुसार नाना गुणहानियों की संख्या बताते हैं ।

मिच्छत्तस्स य उत्ता, उवरीदो तिण्णि तिण्णि सम्मिदिदा ।
अट्टगुणेणूणकमा, सत्तसु रइदा तिरिच्छेण ॥933॥

- अर्थ—जो मिथ्यात्व प्रकृति के पल्य की वर्गशलाका के अर्धच्छेद आदि पल्य के प्रथम मूल के अर्धच्छेदपर्यंत दूने-दूने अर्धच्छेद एक-एक वर्ग में कहे गये हैं उनका स्थापन करके पल्य के प्रथममूल से लेकर ऊपर से तीन-तीन वर्गस्थानों के अर्धच्छेद मिलाने से वे आठ-आठ गुणे कम अनुक्रम से होते हैं और वे मिलाये हुए सात स्थानों में जुदे-जुदे आगे-आगे की रचनारूप होते हैं ॥933॥



मिथ्यात्व की 70 को-2 सागर प्रमाण स्थिति की गुणहानियों की संख्या (छे – व छे) है । यह पल्य की वर्गशलाका के छेद से पल्य के प्रथम वर्गमूल के छेद तक की राशियों को जोड़ने पर प्राप्त होती है । इन राशियों का जोड़ यहां सिद्ध करते हैं ।

वर्गधारा में एक स्थान के छेद से अगले स्थान के छेद दुगुने होते हैं । यहां पल्य की वर्गशलाका से प्रारंभ किया है । उसके छेद से अगले-अगले स्थानों के छेद दुगुने-दुगुने होते हैं ।

इनमें अंत से प्रारंभ करके प्रत्येक 3 स्थानों के छेद से उसके ऊपर के 3 स्थानों के छेद 8 गुणे हीन होते हैं।

प्रारंभ से लेकर जोड़ने पर प्रत्येक तीन स्थानों के छेद से अगले तीन स्थानों के छेद 8 गुणा होते हैं ।

वर्गशलाका (तीसरी पंक्ति)	अर्धच्छेद (द्वितीय पंक्ति)	राशि (प्रथम पंक्ति)
1	2	4
2	4	16
3	8	256
4	16	65536
5	32	65536 x 65536
6	64	42= x 42=
7	128	42= x 42= x42= x 42=

अर्द्धच्छेद	धारा
व. श. के छे	व. श.
व. छे × 2	व.श ²
व. छे × 2 × 2	व.श ⁴
व. छे × 2 × 2 × 2	व.श ⁸
व. छे × 2 ⁴	व.श ¹⁶
व. छे × 2 ⁵	व.श ³²
व. छे × 2 ⁶	व.श ⁶⁴
व. छे × 2 ⁷	व.श ¹²⁸
व. छे × 2 ⁸	व.श ²⁵⁶
⋮	⋮

अर्द्धच्छेद	धारा
छे	पल्य का नवा मूल
$\frac{छे}{512}$	पल्य का आठवा मूल
$\frac{छे}{256}$	पल्य का 7वा मूल
$\frac{छे}{128}$	
$\frac{छे}{64}$	$64\sqrt{प}$
$\frac{छे}{32}$	$32\sqrt{प}$
$\frac{छे}{16}$	$16\sqrt{प}$
$\frac{छे}{8}$	$8\sqrt{प}$
$\frac{छे}{4}$	$4\sqrt{प}$
$\frac{छे}{2}$	$\sqrt{प}$
छे	प

अंत के 3 स्थानों का जोड़



वर्गस्थान	$\sqrt{प}$	$\sqrt[4]{प}$	$\sqrt[8]{प}$
छेद	$\frac{छे}{2}$	$\frac{छे}{4}$	$\frac{छे}{8}$

इन तीनों के जोड़ का सूत्र

$$\frac{(\text{अंतधन} \times \text{गुणकार}) - \text{आदि}}{\text{गुणकार} - 1}$$

$$\frac{\left(\frac{छे}{2} \times 2\right) - \frac{छे}{8}}{2-1}$$

$$छे - \frac{छे}{8}$$

$$\frac{छे \times 8 - छे}{8} = \frac{छे \times 7}{8}$$

आगे के 3 मूलों के
3 छेदों का जोड़



वर्गस्थान	$16\sqrt{p}$	$32\sqrt{p}$	$64\sqrt{p}$
छेद	$\frac{\text{छे}}{16}$	$\frac{\text{छे}}{32}$	$\frac{\text{छे}}{64}$

इनका जोड़

$$= \frac{(\text{अंतधन} \times \text{गुणकार}) - \text{आदि}}{\text{गुणकार} - 1}$$

$$\frac{\left(\frac{\text{छे}}{16} \times 2\right) - \frac{\text{छे}}{64}}{2-1}$$

$$\frac{\text{छे}}{8} - \frac{\text{छे}}{64}$$

$$= \frac{\text{छे} \times 8}{64} - \frac{\text{छे}}{64}$$

$$\frac{\text{छे} \times 8 - \text{छे}}{64} = \frac{\text{छे} \times 7}{64}$$

आगे के 3 मूलों के 3 छेदों का जोड़



इनका जोड़

$$= \left(\frac{\text{छे}}{128} \times 2 \right) - \frac{\text{छे}}{512}$$

$$= \frac{\text{छे}}{64} - \frac{\text{छे}}{512}$$

$$= \frac{\text{छे} \times 8}{64 \times 8} - \frac{\text{छे}}{512}$$

$$= \frac{\text{छे} \times 7}{512}$$

वर्गस्थान

पल्य का
7वा मूल

पल्य का
आठवा
मूल

पल्य का
नवा मूल

छेद

$\frac{\text{छे}}{128}$

$\frac{\text{छे}}{256}$

$\frac{\text{छे}}{512}$

प्रथम तीन छेदों
का जोड़

$$\frac{\text{छे} \times 7}{8}$$

अगले तीन छेदों
का जोड़

$$\frac{\text{छे} \times 7}{8 \times 8}$$

अगले तीन छेदों
का जोड़

$$\frac{\text{छे} \times 7}{8 \times 8 \times 8}$$

ये सभी जोड़ उत्तरोत्तर
आठ गुणे हीन हैं। इसी
तरह उतरते-उतरते तीन-
तीन स्थानों के जोड़ 8
गुणे हीन होते जाते हैं।

प्रारंभ में पल्य की
वर्गशलाका के छेद से
अगले स्थान के छेद दुगुने-
दुगुने हैं ।

उनमें भी तीन-तीन स्थानों
का जोड़ पूर्व के 3 स्थानों
के जोड़ से 8 गुणा हीन है।

क्र.	वर्गस्थान के छेद	
1	व. श. के छे	दुगुने
2	व. छे × 2	दुगुने
3	व. छे × 2 × 2	
4	व. छे × 2 × 2 × 2	दुगुने
5	व. छे × 2 ⁴	
6	व. छे × 2 ⁵	
7	व. छे × 2 ⁶	
8	व. छे × 2 ⁷	
9	व. छे × 2 ⁸	

7, 8,
9वीं
राशि का
जोड़

(अन्तराशि × गुणकार) – आदिराशि

व. छे × 2⁸ × 2 – व. छे × 2⁶

व. छे × 8 × 8 × 4 × 2 –

व. छे × 8 × 8 × (4 × 2 –

1)

व. छे × 8 × 8 × 7

4, 5, 6ठी राशि का जोड़

$$\text{व. छे} \times 8 \times 4 \times 2 - \text{व. छे} \times 8$$

$$\text{व. छे} \times 8 \times (4 \times 2 - 1)$$

$$\text{व. छे} \times 8 \times (8 - 1)$$

$$\text{व. छे} \times 8 \times 7$$

1, 2, 3री राशि का जोड़

$$\text{व. छे} \times 4 \times 2 - \text{व. छे}$$

$$\text{व. छे} \times 8 - \text{व. छे}$$

$$\text{व. छे} \times 7$$

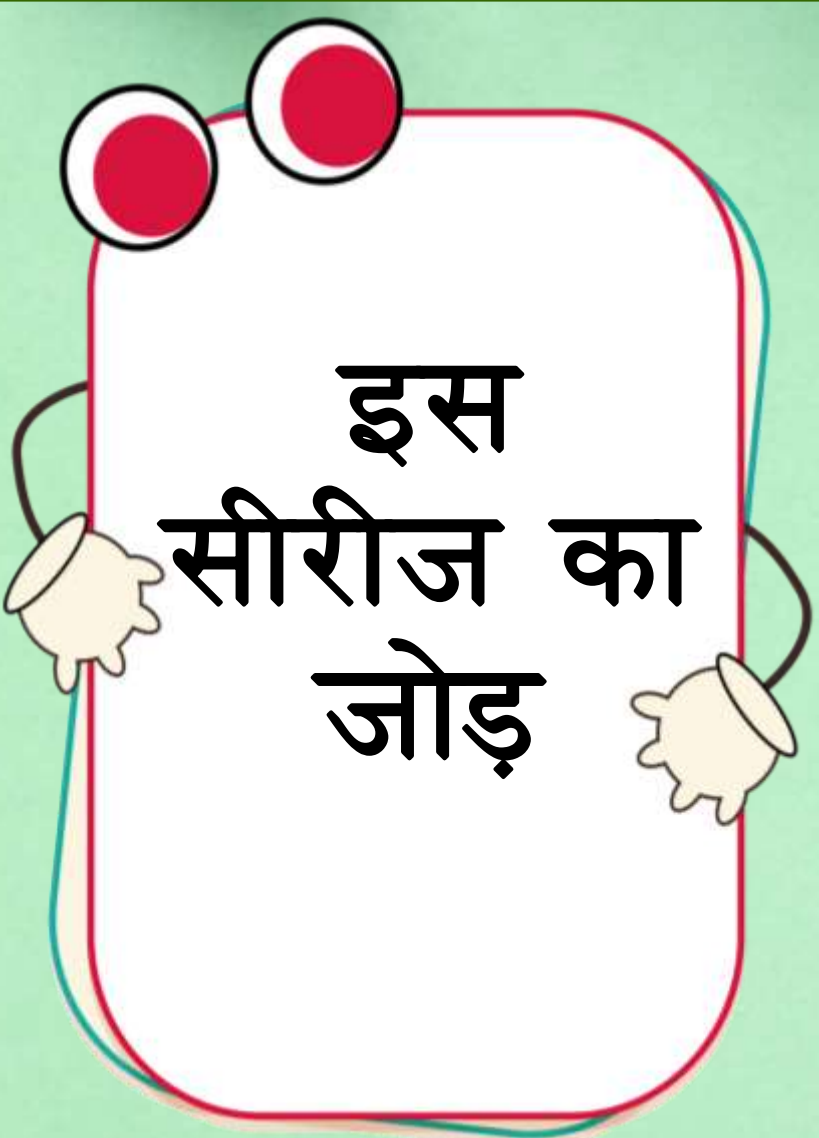
इस प्रकार 3-3 वर्गों के छेदों का जोड़ 8 - 8 गुणा हीन होता है ।



3-3 स्थानों का जोड़

नीचे से ऊपर तक की राशियाँ आठ-आठ गुणी हैं। अतः यह एक सीरीज है।

पद	राशि
पल्य के 1, 2, 3 मूल के छेदों का जोड़	$\frac{\text{छे} \times 7}{8}$
पल्य के 4, 5, 6 मूल के छेदों का जोड़	$\frac{\text{छे} \times 7}{8 \times 8}$
पल्य के 7, 8, 9 मूल के छेदों का जोड़	$\frac{\text{छे} \times 7}{8 \times 8 \times 8}$
⋮	
पल्य की व. श. के 8, 7, 6ठे वर्गों के छेदों का जोड़	व. छे $\times 8 \times 8 \times 7$
पल्य की व. श. के 5, 4, 3रे वर्गों के छेदों का जोड़	व. छे $\times 8 \times 7$
पल्य की व. श. के 2, 1ले वर्गों के छेदों और पल्य की व. श. का जोड़	व. छे $\times 7$



इस सीरीज का जोड़

$$\frac{(\text{अंतधन} \times \text{गुणकार}) - \text{आदि}}{\text{गुणकार} - 1}$$

$$\frac{\text{छे} \times 7 \times 8}{8} - \text{व. छे.} \times 7$$
$$\frac{\quad}{8 - 1}$$

$$\frac{\text{छे} \times 7 - \text{व. छे.} \times 7}{7}$$

$$\frac{(\text{छे} - \text{व. छे.}) \times 7}{7} = \text{छे} - \text{व. छे.}$$

इस प्रकार मिथ्यात्व की नाना गुणहानि (छे - व. छे) है - यह सिद्ध हुआ, जो कि पल्य की व. श. के छेद से \sqrt{p} के छेद तक की राशि का जोड़ है।

शेष स्थितियों की नाना गुणहानि

यह नाना गुणहानि 70 को-2 सागर प्रमाण स्थिति के लिए है ।

शेष स्थितियों की नाना गुणहानि के लिए इसी series का प्रयोग करेंगे।

इस series को 7 स्थानों पर लिखना है।

प्रत्येक स्थान पर त्रैराशिक करके 10 को-2 सागर, 20 को-2 सागर से लेकर 70 को-2 सागर तक की स्थितियों की नाना गुणहानि निकाली जायेगी।

तत्थंतिमं छिदिस्स य, अट्टमभागो सलायच्छेदा हु ।
आदिमरासिपमाणं, दसकोडाकोडिपडिबद्धे ॥934॥

- अर्थ—उन सात पंक्तियों में से प्रथम पंक्ति का त्रैराशिक 10 को-2 सागर के आधार से करने पर प्राप्त राशी अंतिम स्थान में अर्धच्छेदों के आठवें भागप्रमाण है और प्रथम राशि वर्गशलाका के अर्धच्छेद प्रमाण है।
- इस पूरी पंक्ति का जोड़ करने पर 10 को-2 सागर संबंधी नाना गुणहानि राशि का प्रमाण होता है ॥934॥

10 को-2 सागर स्थिति के लिये त्रैराशिक

प्रमाण	फल	इच्छा	त्रैराशिक	लब्ध
70 को-2 सागर	$\frac{\text{छे} \times 7}{8}$	10 को-2 सागर	$\frac{\frac{\text{छे} \times 7}{8} \times 10 \text{ को} - 2 \text{ सागर}}{70 \text{ को} - 2 \text{ सागर}}$	$\frac{\text{छे}}{8}$
70 को-2 सागर	$\frac{\text{छे} \times 7}{8 \times 8}$	10 को-2 सागर	$\frac{\frac{\text{छे} \times 7}{8 \times 8} \times 10 \text{ को} - 2 \text{ सागर}}{70 \text{ को} - 2 \text{ सागर}}$	$\frac{\text{छे}}{8 \times 8}$
⋮				⋮
70 को-2 सागर	व. छे. $\times 7 \times 8$	10 को-2 सागर	$\frac{\text{व. छे.} \times 7 \times 8 \times 10 \text{ को} - 2 \text{ सागर}}{70 \text{ को} - 2 \text{ सागर}}$	व. छे. $\times 8$
70 को-2 सागर	व. छे. $\times 7$	10 को-2 सागर	$\frac{\text{व. छे.} \times 7 \times 10 \text{ को} - 2 \text{ सागर}}{70 \text{ को} - 2 \text{ सागर}}$	व. छे

उपर्युक्त सारी लब्धराशियों का जोड़

$$\frac{\frac{\text{छे} \times 8}{8} - \text{व.छे.}}{8-1} = \frac{\text{छे} - \text{व.छे.}}{7}$$

यह 10 को-2 सागर की नाना गुणहानियों की संख्या है ।

इतनी बार 2 का अंक रखकर परस्पर गुणा करने से इसकी अन्योन्याभ्यस्त राशि आती है ।

इगिपंतिगदं पुध पुध, अप्पिट्टेण य हदे हवे णियमा ।
अप्पिट्टस्स य पंती, णाणागुणहाणिपडिबद्धा ॥935॥

- अर्थ—शेष छह पंक्तियों में से एक-एक पंक्ति में जुदे-जुदे अपने इष्ट (20 को-2 सागरादि) का गुणा करने से नियम से अपनी-अपनी इष्टराशि जो 20 को-2 सागरादि है, उसकी नाना गुणहानि शलाका की पंक्तियाँ होती हैं ॥935॥



अप्पिट्टुपंतिचरिमो, जेत्तियमेत्ताणि वग्गमूलाणं ।
छेदणिवहोत्ति णिहाणिय, सेसं च य मेलिदे इट्ठा ॥936॥

- अर्थ—अपनी-अपनी इष्ट पंक्तियों में अंतिम स्थानपर्यंत जितने स्थान हों उतने वर्गमूलों के अर्धच्छेदों के समूह को निर्धारित करके सबको मिलाने से अपने-अपने विवक्षित इष्ट स्थान की नाना गुणहानि होती है ॥936॥



20 को-2 सागर स्थिति के लिये त्रैराशिक

प्रमाण	फल	इच्छा	त्रैराशिक	लब्ध
70 को-2 सागर	$\frac{\text{छे} \times 7}{8}$	20 को-2 सागर	$\frac{\frac{\text{छे} \times 7}{8} \times 20 \text{ को} - 2 \text{ सागर}}{70 \text{ को} - 2 \text{ सागर}}$	$\frac{\text{छे}}{8} \times 2$
70 को-2 सागर	$\frac{\text{छे} \times 7}{8 \times 8}$	20 को-2 सागर	$\frac{\frac{\text{छे} \times 7}{8 \times 8} \times 20 \text{ को} - 2 \text{ सागर}}{70 \text{ को} - 2 \text{ सागर}}$	$\frac{\text{छे} \times 2}{8 \times 8}$
⋮				⋮
70 को-2 सागर	व. छे. $\times 7 \times 8$	20 को-2 सागर	$\frac{\text{व. छे.} \times 7 \times 8 \times 20 \text{ को} - 2 \text{ सागर}}{70 \text{ को} - 2 \text{ सागर}}$	व. छे. $\times 8 \times 2$
70 को-2 सागर	व. छे. $\times 7$	20 को-2 सागर	$\frac{\text{व. छे.} \times 7 \times 20 \text{ को} - 2 \text{ सागर}}{70 \text{ को} - 2 \text{ सागर}}$	व. छे $\times 2$

उपर्युक्त सारी लब्धराशियों का जोड़

$$\frac{\frac{\text{छे}_{2 \times 8} - \text{व.छे.2}}{8}}{8-1} = \frac{(\text{छे} - \text{व.छे}) \times 2}{7}$$

यह 20 को-2 सागर की नाना गुणहानियों की संख्या है ।

इतनी बार 2 का अंक रखकर परस्पर गुणा करने से इसकी अन्योन्याभ्यस्त राशि आती है ।

इसी प्रकार
त्रैराशिक करके
20 को-2 सागर,
30 को-2 सागर
आदि की भी नाना
गुणहानि शलाका
प्राप्त की जाती है।

स्थिति का प्रमाण	नाना गुणहानि
70 को-2 सागर	छे - व. छे
60 को-2 सागर	$\frac{(\text{छे} - \text{व. छे}) \times 6}{7}$
50 को-2 सागर	$\frac{(\text{छे} - \text{व. छे}) \times 5}{7}$
40 को-2 सागर	$\frac{(\text{छे} - \text{व. छे}) \times 4}{7}$
30 को-2 सागर	$\frac{(\text{छे} - \text{व. छे}) \times 3}{7}$
20 को-2 सागर	$\frac{(\text{छे} - \text{व. छे}) \times 2}{7}$
10 को-2 सागर	$\frac{\text{छे} - \text{व. छे}}{7}$

इट्टुसलायपमाणे, दुगसंवग्गे कदे दु इट्टुस्स ।
पयडिस्स य अण्णोण्णभत्थपमाणं हवे णियमा ॥937॥

- अर्थ—अपनी-अपनी नाना गुणहानि शलाका के प्रमाण
- 2 के अंक लिखकर
- आपस में गुणने से नियम से
- अपनी इष्ट प्रकृति की
- अन्योन्याभ्यस्त राशि का प्रमाण होता है ॥937॥



प्रत्येक कर्म की अन्योन्याभ्यस्त राशि

प्रत्येक कर्म की अपनी-अपनी नाना गुणहानि
शलाका बार

2 के अंक को रखकर

परस्पर (अन्योन्य) गुणा (अभ्यस्त) करने पर

उस-उस कर्म की

अन्योन्याभ्यस्त राशि प्राप्त होती है ।

आवरणवेदणीये, विग्धे पल्लस्स बिदियतदियपदं ।
णामागोदे बिदियं, संखातीदं हवंति त्ति ॥938॥

- अर्थ—ज्ञानावरण, दर्शनावरण, वेदनीय और अंतराय – इन चार कर्मों में अन्योन्याभ्यस्त राशि का प्रमाण, पल्य के द्वितीय वर्गमूल के साथ असंख्यात तीसरे मूलों को गुणने से जो प्रमाण हो उतना है ।
- नाम तथा गोत्रकर्म की अन्योन्याभ्यस्त राशि का प्रमाण असंख्यातगुणे पल्य के द्वितीय वर्गमूलप्रमाण है ॥938॥



कर्मों की अन्योन्याभ्यस्त राशि का प्रमाण

नाना गुणहानि में छेद में से वर्गशलाका के छेद घटाने के लिये कुछ कम की संदृष्टि '-' की है।

कर्म	उत्कृष्ट स्थिति	अन्योन्याभ्यस्त राशि	नाना गुणहानि
ज्ञानावरण, दर्शनावरण, वेदनीय, अंतराय	30 को-2 सागर	पल्य का द्वितीय मूल × पल्य का तृतीय मूल × असंख्यात	छे- × $\frac{3}{7}$
		मूल 2 × मूल 3 × ०	
दर्शन मोहनीय	70 को-2 सागर	$\frac{\text{पल्य}}{\text{पल्य की वर्गशलाका}}$	छे - व. छे
चारित्र मोहनीय	40 को-2 सागर	पल्य का प्रथम मूल × असंख्यात	छे- × $\frac{4}{7}$
		मूल 1 × ०	
नाम, गोत्र	20 को-2 सागर	पल्य का द्वितीय मूल × असंख्यात	छे- × $\frac{2}{7}$
		मूल 2 × ०	
आयु	33 सागर		$\frac{\text{छे} - \text{व छे} \times 33}{70 \text{ को} - 2 \text{ सा}}$

आउस्स य संखेज्जा, तप्पडिभागा ह्वंति णियमेण ।
इदि अत्थपदं जाणिय, इट्ठिट्ठिदिस्साणए मदिमं ॥939॥

- अर्थ—आयु-कर्म की नाना गुणहानि शलाका स्थिति के प्रतिभाग अनुसार होती है । अतः मोहनीय की नाना गुणहानि शलाका के संख्यातवे भाग प्रमाण ही आयु की नाना गुणहानि शलाका होती है ।
- इस प्रकार बुद्धिमान् मनुष्य को विवक्षित स्थानों को जानकर विवक्षित स्थिति की नाना गुणहानि शलाका आदि को त्रैराशिकविधान के अनुसार निकाल लेना चाहिये ॥939॥

आयु कर्म की नाना गुणहानि

70 को-2 सागर प्रमाण स्थिति की नाना गुणहानि (छे - व छे) है,

तो 33 सागर प्रमाण स्थिति की नाना गुणहानि कितनी होगी ?

$$\frac{\text{छे - व छे}}{70 \text{ को-2 सा}} \times 33 \text{ सागर}$$

$$\frac{\text{छे - व छे} \times 33}{70 \text{ को-2}}$$

प्रश्न- कर्मभूमिया मनुष्य, तिर्यंच की आयु की कितनी गुणहानियां होंगी?

उत्तर-एक भी नहीं होगी क्योंकि एक गुणहानि का आयाम भी $\frac{\text{पल्य}}{\text{असंख्यात}}$ है।

कर्मभूमिया मनुष्य, तिर्यंच की उत्कृष्ट आयु संख्यात वर्ष प्रमाण (1 कोटि पूर्व) ही होती है ।

इसलिए इतने काल में चयहीन क्रम से निषेकों का बंटवारा होगा, गुणहानि नहीं बनेगी ।

उक्कस्सट्ठिदिबंधे, सयलाबाहा ह सव्वठिदिरयणा ।
तक्काले दीसदि तो, धो धो बंधाट्ठिदीणं च ॥940॥

- अर्थ—विवक्षित प्रकृति का उत्कृष्ट स्थितिबंध होने पर उसी काल में उत्कृष्ट स्थिति की आबाधा और सब स्थिति की रचना भी देखी जाती है ।
- उस स्थिति के अंत के निषेक से नीचे-नीचे प्रथम निषेकपर्यंत स्थितिबंधरूप स्थितियों की एक-एक समय हीनता देखनी चाहिये ॥940॥

उत्कृष्ट आबाधा और उत्कृष्ट स्थिति-रचना

विवक्षित कर्म प्रकृति का उत्कृष्ट स्थितिबंध होते समय उत्कृष्ट आबाधा और उत्कृष्ट स्थितिरचना होती है ।

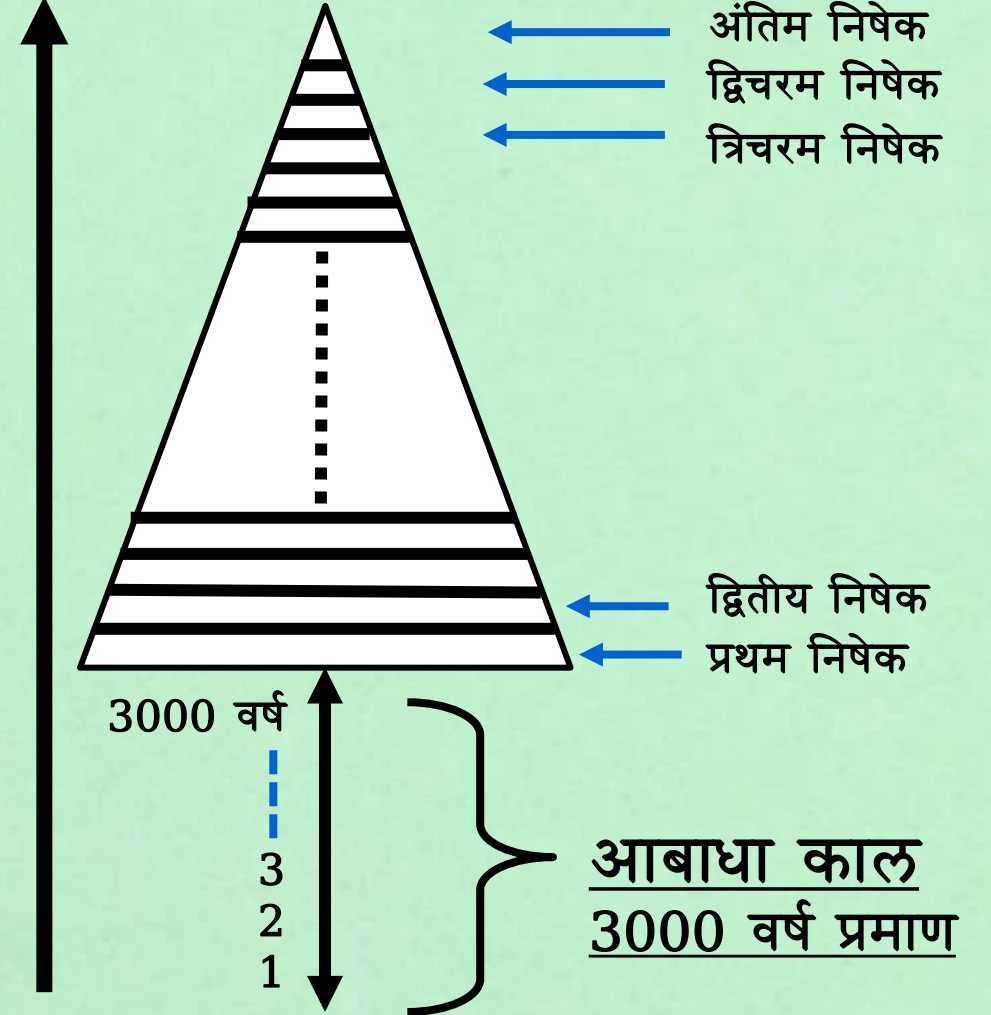
उत्कृष्ट स्थिति स्थित निषेक की स्थिति सर्व स्थितिप्रमाण होती है ।

उससे नीचे के निषेक की स्थिति 1 समय कम होती है ।

ऐसे नीचे-नीचे के निषेकों की स्थिति एक-एक समय कम होती है ।

सबसे जघन्य निषेक की स्थिति उत्कृष्ट आबाधा + 1 समय होती है ।

ज्ञानावरण कर्म की उत्कृष्ट स्थिति -
30 को-2 सागर



बांधे गए समयप्रबद्ध



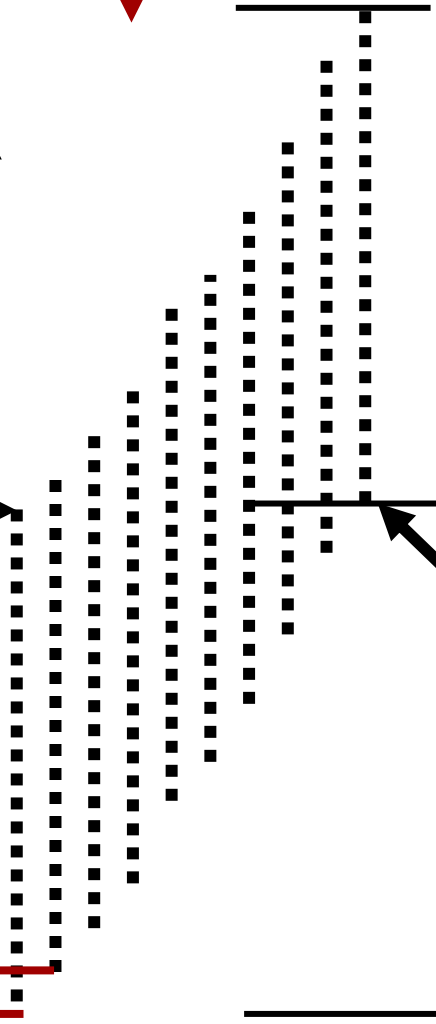
अंतिम निषेक



वर्तमान समय
प्रथम निषेक



यहाँ द्वितीय समयप्रबद्ध बाँधा
यहाँ प्रथम समयप्रबद्ध बाँधा



आबाधाणं बिदियो, तदियो कमसो हि चरमसमयो दु ।
पढमो बिदियो तदियो, कमसो चरिमो णिसेओ दु ॥941॥

- अर्थ—उस बंध होने के बाद आबाधाकाल का दूसरा समय, तीसरा समय इस तरह क्रम से एक-एक बढ़ता हुआ आबाधाकाल का अंतसमय होता है । उसके बाद पहले समय में प्रथम निषेक, दूसरे में दूसरा, तीसरे समय में तीसरा निषेक – इस तरह एक-एक बढ़ता हुआ क्रम से अंतसमय में अंत का निषेक होता है ॥941॥



कर्म बंध के प्रथम समय आबाधा का प्रथम समय होता है ।

कर्म बंध के द्वितीय समय में आबाधा का द्वितीय समय बीतता है ।

ऐसे क्रमशः जितनी आबाधा है, उतने समय बीतते हैं ।

आबाधा के पश्चात् प्रथम निषेक का उदय होता है ।

उसके अगले समय द्वितीय निषेक का उदय होता है ।


ऐसे 1-1 निषेक क्रमशः उदय में आते हुए अंतिम निषेक का उदय आता है ।

उदयरूप समय के पश्चात् वे परमाणु कर्मस्वभाव को छोड़ देते हैं, निर्जरित हो जाते हैं ।


समयप्रबद्धपमाणं, होदि तिरिच्छेण वट्टमाणम्मि ।
पडिसमयं बंधुदओ, एक्को समयप्पबद्धो दु ॥942॥

- अर्थ— विवक्षित वर्तमान समय में तिर्यकरूप अर्थात् बराबर रचनारूप हर एक समय में एक समयप्रबद्ध बँधता है और एक समयप्रबद्ध ही उदयरूप होता है ॥942॥


प्रत्येक समय में बंध, उदय का प्रमाण



प्रत्येक
समय में
जीव को



एक
समयप्रबद्ध
का ही बंध



एक समयप्रबद्ध
का ही उदय
होता है ।

प्रश्न- एक समयप्रबद्ध का उदय कैसे?

- उत्तर- किसी एक समय में विवक्षित कर्म की आबाधारहित उत्कृष्ट स्थितिमात्र काल में समय-समय में बद्ध समयप्रबद्धों में से जिन निषेकों की निर्जरा हो गई, वे तो बद्ध नहीं रहे ।
- शेष बचे निषेकों में से प्रथम समयप्रबद्ध के अंतिम निषेक से लगाकर अंतिम समयप्रबद्ध के प्रथम निषेक पर्यंत तिर्यग् (left to right) रचनारूप एक-एक निषेक मिलकर संपूर्ण द्रव्य एक समयप्रबद्ध प्रमाण होता है ।

9

10

11

12

13

14

—

—

—

—

—

—

—

448

480

512

जोड़ 6300

- यही एक समय में उदीयमान एक समयप्रबद्ध द्रव्य है ।
- अन्य शब्दों में अनेक समयों के बद्ध कर्मनिषेक एक समय में उदय में आते हैं । वह सब मिलकर एक समयप्रबद्ध प्रमाण द्रव्य होता है ।

इसे अंकदृष्टि द्वारा स्पष्ट करते हैं -

उत्कृष्ट स्थितिबंध (आबाधा-रहित) 48 समय माना ।

जिस समयप्रबद्ध के सर्व निषेक सत्ता में हैं, उसके सारे 48 निषेक एक पंक्ति में ऊपर-ऊपर लिखें ।

जिस समयप्रबद्ध का एक निषेक गल गया है, उसके प्रथम निषेक को छोड़कर 47 निषेक एक पंक्ति में लिखें ।

जिस समयप्रबद्ध के दो निषेक गल गये हैं, उसके प्रथम-प्रथम निषेकों को छोड़कर 46 निषेक एक पंक्ति में लिखें ।

ऐसे क्रम से लिखते हुए

जिस समयप्रबद्ध के 46 निषेक गल गये हैं, उसके अंतिम 2 निषेक लिखें ।

जिस समयप्रबद्ध के 47 निषेक गल गये हैं, उसका अंतिम निषेक लिखें ।

यह त्रिकोण यंत्र सत्ता की अपेक्षा बनाया है ।

अब उदय का क्रम कहते हैं-

जिस समयप्रबद्ध के 47 निषेक गल गये, उसके अंतिम निषेक का उदय होता है।

जिस समयप्रबद्ध के 46 निषेक गल गये, उसके द्विचरम निषेक का उदय होता है ।

जिस समयप्रबद्ध के 45 निषेक गल गये, उसके त्रिचरम निषेक का उदय होता है ।

ऐसे पूर्वबद्ध प्रत्येक समयप्रबद्ध के एक-एक निषेक का उदय होता है ।

जिस समयप्रबद्ध का 1 ही निषेक गला है, उसके द्वितीय निषेक का उदय होता है ।

जिस समयप्रबद्ध का एक भी निषेक नहीं गला है एवं आबाधा पूर्ण हो गई है, उसका प्रथम निषेक गलता है ।

ध्यान रहे कि एक समय में एक समयप्रबद्ध का एक ही निषेक गलता है । भिन्न-भिन्न समयप्रबद्धों के अनेक निषेक मिलकर एक समयप्रबद्ध गलता है ।

इन सब निषेकों का जोड़ करने पर एक समयप्रबद्ध का प्रमाण होता है ।

इसी प्रकार अगले समय में अनेकों समयप्रबद्धों के एक-एक निषेकों का उदय होने पर संपूर्ण निषेक एक समयप्रबद्ध प्रमाण होते हैं ।

9	10	11	12	13	14	—	—	—	—	—	—	448	480	512	जोड़ 6300
---	----	----	----	----	----	---	---	---	---	---	---	-----	-----	-----	-----------

प्रश्न- 512 रूप
प्रथम निषेक का
उदय तो आ चुका
है। अब अगले
समय में 512
रूप प्रथम निषेक
का उदय पुनः
कहां से होगा?



उत्तर- जिस समयप्रबद्ध का संपूर्ण
आबाधा का समय बीत चुका है, और
जिसका अभी एक भी निषेक नहीं
गला है – ऐसे पूर्वबद्ध समयप्रबद्ध का
प्रथम निषेक यहां उदय-योग्य हो जाता
है। उसका उदय होने पर संपूर्ण
समयप्रबद्ध होता है।



सत्तं समयपबद्धं, दिवड्ढगुणहाणि ताडियं ऊणं ।
तियकोणसरूवट्टिद-दव्वं मिलिदे हवे णियमा ॥943॥

- अर्थ—सत्त्वद्रव्य, कुछ कम डेढ़ गुणहानि से गुणा हुआ समयप्रबद्ध प्रमाण है ।
- वह त्रिकोणरचना के सब द्रव्य का जोड़ देने से नियम से इतना ही होता है ॥943॥



सत्ता स्थित द्रव्य का प्रमाण

$$= \frac{3}{2} \times \text{गुणहानि} \times \text{समयप्रबद्ध-}$$

यह किस प्रकार आता है - इसे जानने के लिए त्रिकोण यंत्र के जोड़ के माध्यम से जानेंगे ।

त्रिकोण-रचना के द्रव्य को कैसे जोड़ेंगे?

- पूरे सत्त्व द्रव्य को गुणहानियों में विभाजित करेंगे ।
- हर एक गुणहानि का जोड़ निकालेंगे ।
- जोड़ को सरल करने के लिए प्रथम गुणहानि के प्रथम निषेक का जो प्रमाण है (6300), प्रथम गुणहानि के शेष निषेकों को भी इसी प्रमाण बनाएंगे।
- प्रथम निषेक प्रमाण बनाने के लिये जो दूसरे आदि निषेकों में द्रव्य कम है, उतना वहाँ ऋण देकर मिलाएंगे।
- ऐसा ऋण देने से प्रथम गुणहानि का जोड़ = (प्रथम निषेक X गुणहानि आयाम) होगा।
- इसी प्रकार दूसरी गुणहानि के द्रव्य में भी यथायोग्य ऋण मिलाकर उसे दूसरी गुणहानि के प्रथम निषेक (3100) प्रमाण बना देते हैं।
- शेष गुणहानियों में भी इसी प्रकार करना ।
- इस प्रकार सारा द्रव्य एक क्रम में प्राप्त हो गया।
- अब इस द्रव्य को जोड़कर इसमें से जो ऋण मिलाये थे वह घटा देंगे ।
- घटाने पर जो लब्ध आयेगा, वह सत्त्व द्रव्य का प्रमाण होगा।

							9	0	0	0	0	0	0	160	176	192	208	224	240	256	288	3388
						9	10	0	0	0	0	0	0	176	192	208	224	240	256	288	320	3708
			9	10	11	0	0	0	0	0	0	0	192	208	224	240	256	288	320	352	4060	
		9	10	11	12	0	0	0	0	0	0	0	208	224	240	256	288	320	352	384	4444	
	9	10	11	12	13	0	0	0	0	0	0	0	224	240	256	288	320	352	384	416	4860	
		9	10	11	12	13	14	0	0	0	0	0	240	256	288	320	352	384	416	448	5308	
	9	10	11	12	13	14	15	0	0	0	0	0	256	288	320	352	384	416	448	480	5788	
9	10	11	12	13	14	15	16	0	0	0	0	0	288	320	352	384	416	448	480	512	6300	

प्रथम गुणहानि

द्वितीय गुणहानि

									9	10	11	12	0	0	0	144	→	1644					
								9	10	11	12	0	0	0	144	160	→	1804					
								0	11	12	0	0	0	144	160	176	→	1980					
								0	0	12	0	0	0	144	160	176	192	→	2172				
								0	0	0	0	0	144	160	176	192	208	→	2380				
								9	0	0	0	0	0	144	160	176	192	208	224	→	2604		
								9	0	0	0	0	0	144	160	176	192	208	224	240	→	2844	
								9	0	0	0	0	0	144	160	176	192	208	224	240	256	→	3100

यस्य रूप निषेक

त्रिकोण रचना की गुणहानियाँ

- त्रिकोण रचना में वर्तमान समय संबंधी जो प्रथम पंक्ति तिर्यक्-रूप में लिखी है, उसको प्रथम गुणहानि का प्रथम निषेक कहते हैं।
- उसके ऊपर की पंक्तियों में जो निषेक लिखे हैं, उनको प्रथम गुणहानि का द्वितीयादि निषेक कहते हैं।
- गुणहानि आयाम प्रमाण पंक्ति पूर्ण होने पर उसके ऊपर जो पंक्ति है उसको द्वितीय गुणहानि का प्रथम निषेक कहते हैं।
- उसके ऊपर की पंक्ति को दूसरा निषेक कहते हैं। इस तरह से गुणहानि प्रमाण पंक्ति पूर्ण होने पर उसके ऊपर की पंक्ति को तीसरी गुणहानि का प्रथम निषेक कहते हैं।
- इसी प्रकार अन्त की गुणहानि पर्यंत जानना।

इसे अंक-संदृष्टिरूप त्रिकोणयंत्र में दिखाते हैं-

- सबसे प्रथम पंक्ति में 9 के निषेक से लेकर 512 पर्यन्त सब निषेक लिखे हैं। उनको प्रथम गुणहानि का प्रथम निषेक कहते हैं। इसका जोड़ सम्पूर्ण समयप्रबद्ध प्रमाण 6300 होता है।

9	10	11	12	416	448	480	512
---	----	----	----	-------	-----	-----	-----	-----

- उससे ऊपर दूसरी पंक्ति में 9 के निषेक से लगाकर 480 के निषेक पर्यन्त निषेक लिखे हैं। उसको प्रथम गुणहानि का दूसरा निषेक कहते हैं। इसका जोड़ (समयप्रबद्ध — 512) प्रमाण होता है।

9	10	11	12	416	448	480
---	----	----	----	-------	-----	-----	-----

- उससे ऊपर तीसरी पंक्ति में 9 के निषेक से लगाकर 448 के निषेक पर्यन्त लिखे हैं। उसको प्रथम गुणहानि का तीसरा निषेक कहते हैं। इसका जोड़ इससे पूर्व की पंक्ति के जोड़ में से 480 घटाने जो शेष रहे उतना है अर्थात् (समयप्रबद्ध — 512 — 480) ।

9	10	11	12	416	448
---	----	----	----	-------	-----	-----

- इस प्रकार अन्त की गुणहानि के अन्तिम निषेक पर्यन्त का जोड़ एक-एक निषेकरूप चय से हीन होता जाता है। इस प्रकार अड़तालीस पंक्तियाँ होती हैं।
- उनमें प्रथम से लगाकर आठ पंक्ति पर्यन्त पंक्तियों को प्रथम गुणहानि का प्रथमादि निषेक कहते हैं। उसके ऊपर नौवीं पंक्ति से लगाकर सोलहवीं पंक्ति पर्यन्त पंक्तियों को द्वितीय गुणहानि का प्रथमादि निषेक कहते हैं। इस प्रकार आठ-आठ पंक्तियों की एक गुणहानि जानना।
- उनमें जो निषेकरूप चय घटाये थे उनको मिलाने पर (ऋण देने पर) प्रथम गुणहानि का जोड़ समयप्रबद्ध को गुणहानि आयाम से गुणा करने पर जो प्रमाण हो उतना है (6300×8)।
- उसमें अन्त की गुणहानि का जोड़ (100×8) है, उसे प्रथम गुणहानि में से घटाने पर (6200×8) होता है। उसका आधा (3100×8) होता — यही दूसरी गुणहानि का जोड़ है।
- उसमें से अन्त की गुणहानि का जोड़ (100×8) घटाने पर (3000×8) होता है। उसका आधा (1500×8) होता है। यही तीसरी गुणहानि का जोड़ है।
- इसी प्रकार अन्त की गुणहानि पर्यन्त सब गुणहानियों के द्रव्य को जोड़ लेना चाहिये ।

इन सबको जोड़ने की विधि

प्रथम गुणहानि में जो चय कम थे उनको जोड़ने पर प्रथम गुणहानि में ऋण होता है।

उसका आधा दूसरी गुणहानि में ऋण होता है।

इसी प्रकार अन्त की गुणहानि पर्यन्त, आधा-आधा होता है।

इन सबको जोड़कर ऋणसहित गुणहानियों के जोड़ में से घटाने पर जो शेष रहे वही त्रिकोण यन्त्र का जोड़ होता है।

प्रथम गुणहानि में अभाव द्रव्य

इस अभाव द्रव्य के प्रत्येक निषेक को प्रथम निषेक प्रमाण करना है।

प्रथम पंक्ति में सारे ही निषेक का जोड़ प्रथम निषेक प्रमाण है।

अतः इसे छोड़कर द्वितीयादि पंक्ति में चयों को जोड़ेंगे।

8 th निषेक में	320	352	384	416	448	480	512
7 th निषेक में		352	384	416	448	480	512
6 th निषेक में			384	416	448	480	512
5 th निषेक में				416	448	480	512
4 th निषेक में					448	480	512
3 rd निषेक में						480	512
2 nd निषेक में							512
1 st निषेक में	कुछ भी नहीं। क्योंकि संपूर्ण गुणहानि प्रमाण द्रव्य उपलब्ध है।						
कुल निषेक	320× 1	352× 2	384× 3	416× 4	448× 5	480× 6	512 ×7

इस अभाव द्रव्य में जितने चय कम हैं, उतने मिलायें,
जिससे प्रत्येक निषेक; प्रथम निषेक प्रमाण हो जाये।

8 th निषेक में	$320+(32 \times 6)$	$352+(32 \times 5)$	$384+(32 \times 4)$	$416+(32 \times 3)$	$448+(32 \times 2)$	$480+32$	
7 th निषेक में		$352+(32 \times 5)$	$384+(32 \times 4)$	$416+(32 \times 3)$	$448+(32 \times 2)$	$480+32$	
6 th निषेक में			$384+(32 \times 4)$	$416+(32 \times 3)$	$448+(32 \times 2)$	$480+32$	
5 th निषेक में				$416+(32 \times 3)$	$448+(32 \times 2)$	$480+32$	
4 th निषेक में					$448+(32 \times 2)$	$480+32$	
3 rd निषेक में						$480+32$	
2 nd निषेक में							—
प्रथम निषेक प्रमाण निषेक	512×1	512×2	512×3	512×4	512×5	512×6	512×7

इस प्रकार सब अभाव द्रव्य में ऋण मिलाने पर सारे निषेक प्रथम निषेक (512) प्रमाण हो जाते हैं ।

इस ऋणसहित अभाव द्रव्य का जोड़

$$\begin{array}{l} \text{ऋण द्रव्य की संदृष्टि} \\ = ५१२ \mid ८-१ \mid ८ \\ \quad \quad \quad २ \quad १ \end{array}$$

एक कम गच्छ का एक बार संकलन ×
प्रथम निषेक

$$\text{गच्छ} = 8$$

$$\frac{(\text{गच्छ}-1) \times \text{गच्छ}}{2 \times 1} \times \text{प्रथम निषेक}$$

$$\frac{7 \times 8}{2} \times 512 = 28 \times 512 = 14336$$

द्वितीय ऋण

अभाव द्रव्य में जो चय मिलाए थे,
उसका जोड़

8वें निषेक में	32×21
7वें निषेक में	32×15
6ठे निषेक में	32×10
5वें निषेक में	32×6
4थे निषेक में	32×3
3रे निषेक में	32×1

इन सबका जोड़

दो कम गच्छ का दो बार संकलन \times चय

$$\text{गच्छ} = 8$$

$$\frac{(8-2) \times (8-1) \times 8}{3 \times 2 \times 1} \times 32$$

$$\frac{6 \times 7 \times 8}{3 \times 2 \times 1} \times 32 = 56 \times 32 = 1792$$

इसकी संदृष्टि ३२ | ८-२ | ८-१ | ८
३ २ १

प्रथम गुणहानि का द्रव्य

सर्वधन – (प्रथम ऋण – द्वितीय ऋण)

$$(6300 \times 8) - (14336 - 1792)$$

$$50,400 - 12,544 = 37,856$$

अर्थ संदृष्टि

सर्वधन

प्रथम ऋण

द्वितीय ऋण

$$6300 \times 8$$

$$\frac{512 \times (8-1) \times 8}{2 \times 1}$$

$$\frac{32 \times (8-2) \times (8-1) \times 8}{3 \times 2 \times 1}$$

प्रथम गुणहानि का शुद्ध ऋण द्रव्य

- प्रथम ऋण में से दूसरा ऋण घटाकर जो शेष रहे, उसे सर्वधन में से कम करने पर प्रथम गुणहानि का जोड़ होता है ।

- प्रथम ऋण $\frac{512 \times (8-1) \times 8}{2}$ — द्वितीय ऋण $\frac{32 \times (8-2) \times (8-1) \times 8}{3 \times 2}$

- $\frac{32 \times 8 \times 2 \times (8-1) \times 8 \times 3}{2 \times 3}$ — $\frac{32 \times (8-2) \times (8-1) \times 8}{3 \times 2}$

(3 संख्या से समच्छेद करने पर)

- समान संख्या बाहर लेने पर

- $\frac{32 \times (8-1) \times 8}{6} \times [8 \times 2 \times 3 - (8 - 2)]$

- $\frac{32 \times (8-1) \times 8}{6} \times [8 \times 6 - 8 + 2]$

- $\frac{32 \times (8-1) \times 8}{6} \times [8 \times 5 + 2]$

इस प्रकार प्रथम गुणहानि का शुद्ध ऋण द्रव्य यह प्राप्त हुआ ।

उपरिमगुणहाणीणं, धणमंतिमहीणपढमदलमेत्तं ।
पढमे समयपबद्धं, ऊणकमेणट्टिया तिरिया ॥944॥

- अर्थ—द्वितीयादि उपरिम गुणहानियों के द्रव्य का जोड़ अंत की गुणहानि के जोड़ को अपनी-अपनी पूर्व की गुणहानि के जोड़ में से घटा कर जो-जो प्रमाण हो, उसका आधा-आधा होता है।
- प्रथम गुणहानि का जोड़ गुणहानि के प्रमाण से समयप्रबद्ध को गुणने से जो प्रमाण हो उतना होता है ।
- यह गुणहानियों का जोड़ ऋणसहित द्रव्य का है ॥944॥



शेष गुणहानियों का ऋण सहित सर्वधन

द्वितीय गुणहानि का ऋण सहित सर्वधन

प्रथम गुणहानि का ऋणसहित धन - अंतिम गुणहानि का ऋण सहित धन
2

$$\frac{6300 \times 8 - 100 \times 8}{2} = \frac{8 \times (6300 - 100)}{2}$$

$$= \frac{8 \times 6200}{2} = 3100 \times 8$$


तीसरी गुणहानि का ऋणसहित द्रव्य

द्वितीय गुणहानि का द्रव्य - अंतिम गुणहानि का द्रव्य

2

$$\frac{3100 \times 8 - (100 \times 8)}{2} = \frac{(3100 - 100) \times 8}{2}$$

$$= \frac{3000 \times 8}{2} = 1500 \times 8$$



चतुर्थ
गुणहानि
का द्रव्य

तृतीय गुणहानि का द्रव्य – अंतिम गुणहानि का द्रव्य

2

$$\frac{(1500 \times 8) - (100 \times 8)}{2}$$

2

$$= \frac{(1500 - 100) \times 8}{2}$$

$$= \frac{1400 \times 8}{2}$$

$$= 700 \times 8$$

पांचवीं गुणहानि का द्रव्य

चतुर्थ गुणहानि का द्रव्य - अंतिम गुणहानि का द्रव्य
2

$$\frac{(700 \times 8) - (100 \times 8)}{2}$$

$$= \frac{(700 - 100) \times 8}{2}$$

$$= \frac{600 \times 8}{2}$$

$$= 300 \times 8$$

छठी गुणहानि का द्रव्य

$$100 \times 8$$

ये सारे धन
ऋणसहित धन
हैं।

सर्व गुणहानियों का ऋणसहित धन

इन सब धनों का जोड़ करने के लिए सब संख्या समान गुणितरूप करने के लिए एक-एक गुणहानि के द्रव्य में अंतिम गुणहानि का धनमात्र द्रव्य (100×8) मिलाना ।

गुणहानि	ऋण सहित जोड़	+ द्वितीय ऋण	= लब्ध	रूपांतर
6 th गुणहानि	100×8	+ 100×8	200× 8	100×8×2
5 th गुणहानि	300×8	+ 100×8	400× 8	200×8×2
4 th गुणहानि	700×8	+ 100×8	800× 8	400×8×2
3 rd गुणहानि	1500×8	+ 100×8	1600× 8	800×8×2
2 nd गुणहानि	3100×8	+ 100×8	3200× 8	1600×8×2
1 st गुणहानि	6300×8	+ 100×8	6400× 8	3200×8×2

सर्व गुणहानियों का ऋणसहित धन

गुणकार रूप संख्याओं का संकलन सूत्र

$$\frac{(\text{अंतधन} \times \text{गुणकार}) - \text{आदि}}{\text{गुणकार} - 1}$$

$$\frac{(3200 \times 8 \times 2 \times 2) - 100 \times 8 \times 2}{2 - 1} = \frac{[(3200 \times 2) - 100] \times 8 \times 2}{1}$$

$$(6400 - 100) \times 8 \times 2 = 6300 \times 8 \times 2$$

सर्व गुणहानियों का ऋणसहित धन = $6300 \times 8 \times 2$

यह (समयप्रबद्ध $\times 2$ गुणहानि) प्रमाण दिख रहा है ।

इसमें से सारी गुणहानियों का अपना-अपना ऋण घटाने पर शुद्ध जोड़ आ जाता है ।

सर्व गुणहानियों का ऋण द्रव्य

जो प्रथम गुणहानि का ऋण द्रव्य है, उससे द्वितीयादि गुणहानियों का ऋण द्रव्य आधा-आधा है। अतः वह इतना है -

	अर्थ संदृष्टि	अंक संदृष्टि
6 th गुणहानि ऋण द्रव्य	$\frac{1 \times [(8 \times 5) + 2] \times (8 - 1) \times 8}{6}$	392
5 th गुणहानि ऋण द्रव्य	$\frac{2 \times [(8 \times 5) + 2] \times (8 - 1) \times 8}{6}$	784
4 th गुणहानि ऋण द्रव्य	$\frac{4 \times [(8 \times 5) + 2] \times (8 - 1) \times 8}{6}$	1568
3 rd गुणहानि ऋण द्रव्य	$\frac{8 \times [(8 \times 5) + 2] \times (8 - 1) \times 8}{6}$	3136
2 nd गुणहानि ऋण द्रव्य	$\frac{16 \times [(8 \times 5) + 2] \times (8 - 1) \times 8}{6}$	6272
1 st गुणहानि ऋण द्रव्य	$\frac{32 \times [(8 \times 5) + 2] \times (8 - 1) \times 8}{6}$	12544

सब ऋणों का जोड़

$$= \frac{(\text{अंतधन} \times \text{गुणकार}) - \text{आदि}}{\text{गुणकार} - 1}$$

$$= \frac{32 \times [(8 \times 5) + 2] \times (8 - 1) \times 8 \times 2}{6} - \frac{1 \times [(8 \times 5) + 2] \times (8 - 1) \times 8}{6}$$

$$\frac{64 \times [(8 \times 5) + 2] \times (8 - 1) \times 8}{6} - \frac{1 \times [(8 \times 5) + 2] \times (8 - 1) \times 8}{6}$$

$$= \frac{63 \times [(8 \times 5) + 2] \times (8 - 1) \times 8}{6}$$

सर्व गुणहानियों का द्वितीय ऋण

छहों गुणहानियों में मिलाया हुआ दूसरा ऋण

नाना गुणहानि × अंत की गुणहानि का धन

$$6 \times 100 \times 8$$

	सर्व गुणहानियों का धन	प्रथम ऋण	द्वितीय ऋण
संदृष्टि	$6300 \times 8 \times 2$	$\frac{63 \times [(8 \times 5) + 2] \times (8 - 1) \times 8}{6}$	$100 \times 8 \times 6$
अंक संदृष्टि	1,00,800	24696	4800

इन सब राशियों को समयप्रबद्ध के प्रमाण में बनाने के लिए उपर्युक्त तीनों राशियों को उत्कृष्ट समयप्रबद्ध प्रमाण शलाका का (6300) भाग देना ।

सर्व गुणहानियों का धन	प्रथम ऋण	द्वितीय ऋण
$\frac{6300 \times 8 \times 2}{6300}$	$\frac{63 \times [(8 \times 5) + 2] \times (8 - 1) \times 8}{6 \times 6300}$	$\frac{100 \times 8 \times 6}{6300}$
$= 8 \times 2$	$= \frac{[(8 \times 5) + 2] \times (8 - 1) \times 8}{6 \times 100}$	$= \frac{8 \times 6}{63}$

ये सब राशियाँ समयप्रबद्ध प्रमाण हो गयीं । अतः इनकी संदृष्टि को लिखते हैं

सर्व गुणहानियों का धन	प्रथम ऋण	द्वितीय ऋण
$s \partial \times 8 \times 2$	$s \partial \times \frac{[(8 \times 5) + 2] \times (8 - 1) \times 8}{6 \times 100}$	$s \partial \times \frac{8 \times 6}{63}$

प्रथम
ऋण
को
इस
प्रकार
लिखें

$$\frac{स ० \times [(8 \times 5) + 2] \times (8 - 1) \times 8}{6 \times 25 \times 4}$$

$$25 = 3 \text{ गुणहानि} + 1 = (8 \times 3) + 1$$

$$\frac{स ० \times [(8 \times 5) + 2] \times (8 - 1) \times 8}{[(8 \times 3) + 1] \times 6 \times 4}$$

$$6 \times 4 = 24 \text{ यह तीन गुणहानि का प्रमाण है } \rightarrow 8 \times 3$$

$$\frac{स ० \times [(8 \times 5) + 2] \times (8 - 1) \times 8}{[(8 \times 3) + 1] \times 8 \times 3} = \frac{स ० \times [(8 \times 5) + 2] \times (8 - 1)}{[(8 \times 3) + 1] \times 3}$$

$$\frac{\text{स ०} \times [(8 \times 5) + 2] \times (8 - 1)}{[(8 \times 3) + 1] \times 3}$$

$$\frac{\text{स ०} \times (8 \times 5) \times (8 - 1)}{[(8 \times 3) + 1] \times 3} +$$

$$\frac{\text{स ०} \times 2 \times (8 - 1)}{[(8 \times 3) + 1] \times 3}$$

$$\frac{\text{स ०} \times 8 \times 5 \times 8}{[(8 \times 3) + 1] \times 3} -$$

$$\frac{\text{स ०} \times 8 \times 5}{[(8 \times 3) + 1] \times 3}$$

$$\frac{\text{स ०} \times 2 \times 8}{[(8 \times 3) + 1] \times 3} -$$

$$\frac{\text{स ०} \times 2}{[(8 \times 3) + 1] \times 3}$$

A

B

C

D

• यहाँ C राशी को हल करते हैं ।

• इसमें $\frac{\text{स ०} \times 2 \times 8}{[(8 \times 3) + 1] \times 3}$ को 3 से ऊपर नीचे गुणा किया।

$$\bullet \frac{\text{स ०} \times 2 \times 8 \times 3}{[(8 \times 3) + 1] \times 3 \times 3} = \frac{\text{स ०} \times 8 \times 6}{[(8 \times 3) + 1] \times 3 \times 3}$$

• इन 6 रूपों में से 5 रूप लेकर ऊपर की ऋण राशि (A) में मिलाना ।

$$\bullet \frac{\text{स ०} \times 8 \times 5 \times 8}{[(8 \times 3) + 1] \times 3} + \frac{\text{स ०} \times 8 \times 5}{[(8 \times 3) + 1] \times 3 \times 3}$$

• 3 से ऊपर-नीचे गुणा करने पर

$$\bullet \frac{\text{स } 0 \times 8 \times 5 \times 8 \times 3}{[(8 \times 3) + 1] \times 3 \times 3} + \frac{\text{स } 0 \times 8 \times 5}{[(8 \times 3) + 1] \times 3 \times 3}$$

$$\bullet \frac{\text{स } 0 \times 8 \times 5 \times [(8 \times 3) + 1]}{[(8 \times 3) + 1] \times 3 \times 3} = \frac{\text{स } 0 \times 8 \times 5}{3 \times 3}$$

• इतना प्रथम ऋण शेष रहा ।

• इसे संदृष्टि के लिए ऊपर-नीचे 2 से गुणा करें ।

$$\bullet \frac{\text{स } 0 \times 8 \times 5 \times 2}{9 \times 2} = \frac{\text{स } 0 \times 8 \times 10}{18}$$

• इसे ऐसे लिख सकते हैं—

$$\bullet \frac{\text{स } 0 \times 8 \times 10}{18} = \frac{\text{स } 0 \times 8 \times 9}{18} + \frac{\text{स } 0 \times 8}{18}$$

• इन 10 रूपों में से एक रूप अलग करने पर शेष 9 रूप इतने हैं -

$$\bullet \frac{\text{स } 0 \times 8 \times 9}{18} = \frac{\text{स } 0 \times 8 \times 1}{2} \text{ (यह स } 0 \times \text{ आधी गुणहानि प्रमाण द्रव्य है ।)}$$



- इस ऋण को सर्व गुणहानियों के धन में से घटाओ ।
- ऋणसहित सर्व गुणहानि द्रव्य – प्रथम ऋण
- $s \partial \times 8 \times 2 - \frac{s \partial \times 8 \times 1}{2}$
- $s \partial \times 8 \times (2 - \frac{1}{2})$
- $s \partial \times 8 \times \frac{3}{2}$
- यह डेढ़ गुणहानि \times समयप्रबद्ध प्रमाण द्रव्य हुआ ।



- इसमें शेष रहा प्रथम ऋण का कुछ भाग तथा पूरा द्वितीय ऋण घटाना है । यह द्रव्य कुछ ही है । अतः इसे घटाने के लिए उपर्युक्त लब्ध राशि में 'कुछ कम' की संदृष्टि '-' लिखें ।
- $s \partial \times 8 \times \frac{3}{2} - \rightarrow s \partial \times 12 -$

इस प्रकार सत्त्व द्रव्य कुछ कम डेढ़ गुणहानि \times समयप्रबद्ध प्रमाण होता है – यह सिद्ध हुआ ।



अंतोकोडाकोडिद्विदित्ति सब्बे णिरंतरद्वाणा ।
उक्कस्सद्वाणादो, सण्णिस्स य हांति णियमेण ॥945॥

- अर्थ—आयु के बिना सात कर्मों के उत्कृष्ट स्थिति से लेकर अंतःको-2 सागरप्रमाण जघन्य स्थितिपर्यंत एक-एक समय कम का क्रम लिये हुए निरंतर स्थिति के भेद संख्यात पल्यप्रमाण होते हैं ।
- ये नियम से संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवों के ही होते हैं ॥945॥



अंतःकोड़ाकोड़ी सागर

- कोड़ा कोड़ी अर्थात्= करोड़ x करोड़
- = 1,00,00,000 x 1,00,00,000
- अंतः अर्थात् 1 करोड़ सागर से ऊपर और 1 कोड़ाकोड़ी सागर से कम
- 1 सागर = 10 कोड़ा कोड़ी पल्य



स्थिति के भेद

जो-जो स्थिति बांधी जा सकती है, वह-वह स्थिति बंध का भेद है ।

जैसे 70 को-2 सागर प्रमाण स्थिति बांधी जा सकती है, यह स्थिति का एक भेद हुआ ।

(70 को-2 सागर – 1 समय) प्रमाण स्थिति बांधी जा सकती है, यह स्थिति का दूसरा भेद हुआ ।

ऐसे जिस कर्म की जितनी स्थितियां बांधी जा सकती हैं, वह सब विवक्षित कर्म के स्थिति के भेद कहलाते हैं ।

स्थिति के
भेद

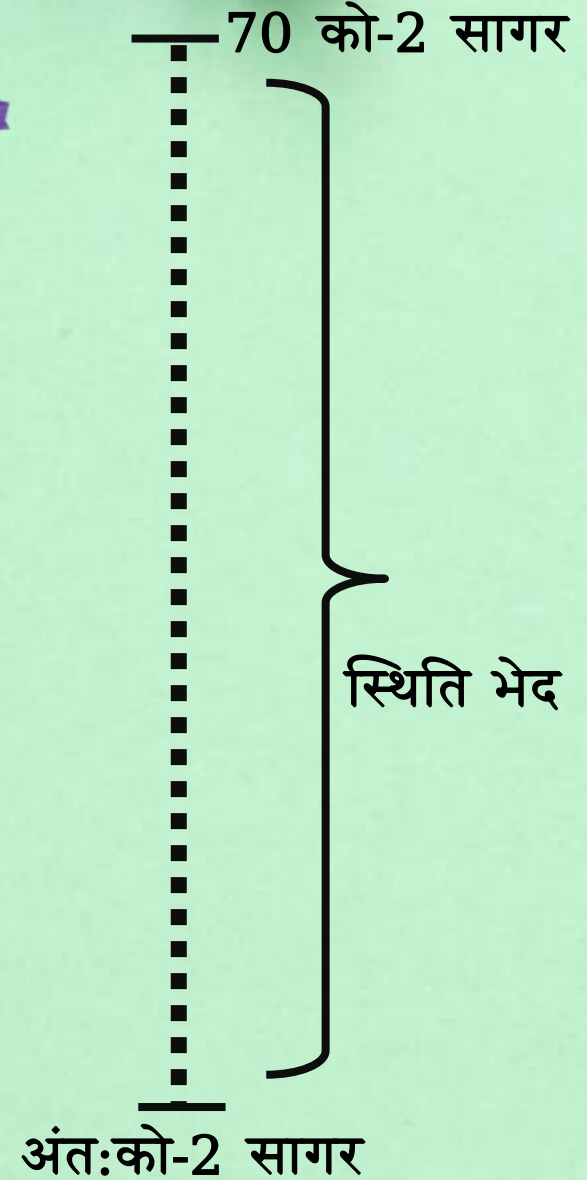
निरंतर स्थिति-भेद

सांतर स्थिति-भेद

निरंतर स्थिति-भेद

उत्कृष्ट से लेकर एक-एक समय कम करते हुए जहां तक स्थिति बंध के भेद पाये जाते हैं, वे स्थिति के भेद निरंतर स्थिति के भेद होते हैं ।

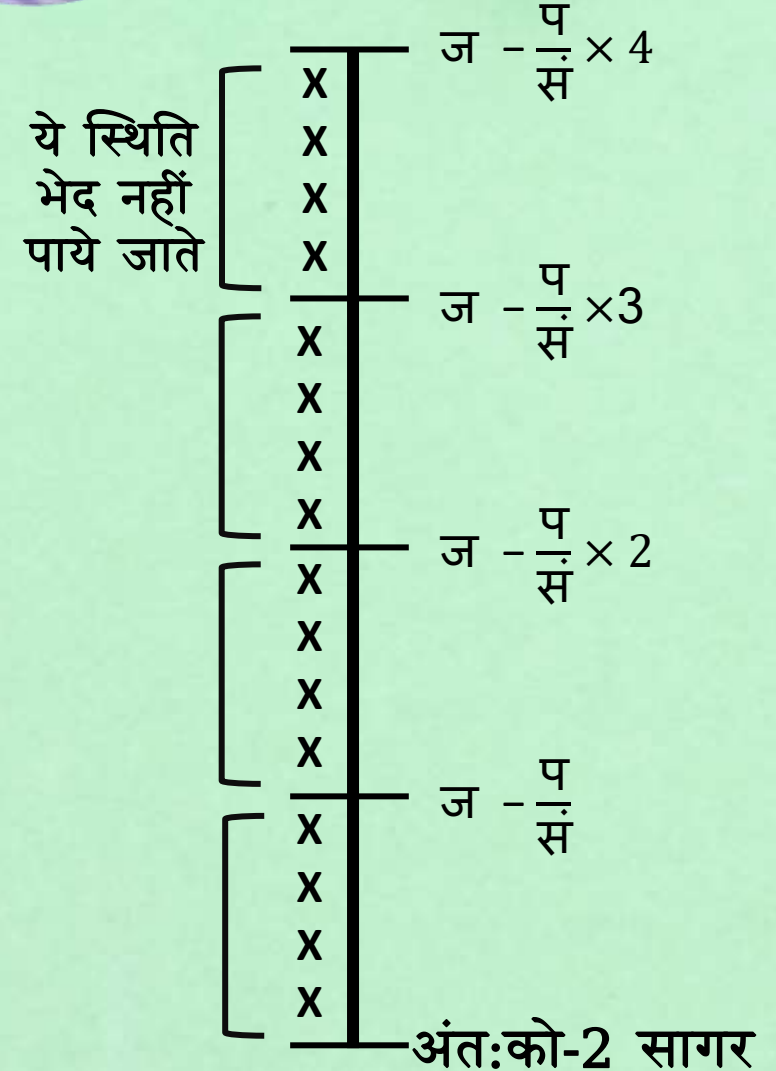
जैसे मिथ्यात्व कर्म के निरंतर स्थिति के भेद 70 को-2 सागर से एक-एक समय कम करते हुए अंतःकोटाकोटि सागर प्रमाण तक के होते हैं ।



सांतर स्थिति-भेद

एक विवक्षित स्थिति बंध भेद के नीचे एक, दो आदि समय हीन स्थिति बंध ना होकर, सीधे बहुत स्थिति घटकर स्थिति बंध पाया जाता है — ऐसे स्थिति के भेदों को सांतर स्थिति के भेद कहते हैं ।

जैसे अधःप्रवृत्तकरण के काल में अंतःकोटाकोटि सागर प्रमाण स्थिति बंध होता है । पश्चात् 1 अंतर्मुहूर्त बाद इस बंध से पल्य/संख्यात भागहीन स्थितिबंध होता है । यहां 1-1 समय हीन स्थितिबंध के भेद नहीं पाये जाते हैं । ऐसे स्थिति के भेदों को सांतर स्थिति भेद कहते हैं ।



निरंतर स्थिति के भेद

निरंतर स्थिति-भेद निकालने का सूत्र

संज्ञी पंचेन्द्रिय जीव को

आयु को छोड़कर शेष 7 कर्मों का जघन्य स्थितिबंध

अंतःको-2 प्रमाण होता है ।

इससे ऊपर एक-एक समय बढ़ते हुए अपने-अपने कर्मों के उत्कृष्ट स्थितिबंध तक निरंतर स्थिति भेद होते हैं ।

(उत्कृष्ट स्थिति — जघन्य स्थिति) + 1

जैसे 10,000 समय का उत्कृष्ट स्थिति-बंध है । जघन्य स्थिति-बंध 50 समय का है । तो निरंतर स्थिति के भेद होंगे:

$$(10,000 - 50) + 1 = 9950 + 1 = 9951$$

इसी प्रकार मूल कर्मों के स्थिति भेद निकालना चाहिए ।

नाम-गोत्र के निरंतर स्थिति-भेद

नाम-गोत्र की उत्कृष्ट स्थिति = 20 को-2 सागर

= 20 को-2 × 10 को-2 पल्य

= 200 को-2 को-2 पल्य

निरंतररूप जघन्य स्थिति = अंत:को-2 सागर याने संख्यात पल्य

निरंतर स्थिति के भेद = संख्यात × संख्यात पल्य — संख्यात पल्य + 1

संख्यात पल्य × (संख्यात - 1) + 1

बीसीय के निरंतर स्थिति के भेद संख्यात पल्य प्रमाण हैं ।

इसी प्रकार तीसीय, चालीसीय, मिथ्यात्व के निरंतर स्थिति-भेद निकलते हैं ।

प्रश्न-क्या सब कर्मों का जघन्य अंतःकोटाकोटि रूप स्थिति भेद समान होता है?

उत्तर- नहीं, सबका जघन्य अंतःको-2 समान नहीं है । कर्मों के स्थिति के अनुपात अनुसार हीनाधिक है ।

नाम-गोत्र का उत्कृष्ट स्थिति बंध सबसे अल्प है, अतः इसका जघन्य स्थिति बंध सबसे कम अंतःकोटाकोटी रूप है ।

तीसीय का उत्कृष्ट स्थिति का बंध नाम-गोत्र से 1.5 गुणा है । इसलिए इसका जघन्य अंतःकोटाकोटी रूप स्थिति बंध भी नाम-गोत्र से 1.5 गुणा है।

इसी प्रकार अन्य कर्मों का भी जानना ।

कर्म

नाम-गोत्र

तीसीय

चारित्र मोहनीय

मिथ्यात्व

जघन्य स्थिति बंध

अंतःकोटाकोटि

अंतःकोटाकोटि सागर $\times 3/2$

अंतःकोटाकोटि सागर $\times 2$

अंतःकोटाकोटि सागर $\times 7/2$

ये निरंतर स्थिति के जघन्य-उत्कृष्ट भेद
संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त-अपर्याप्त के जानना चाहिए ।



शेष 12 जीव-
समासों में
निरंतर स्थिति
भेद

इसके अलावा शेष 12 जीव-समासों में भी
निरंतर स्थिति के भेद पाये जाते हैं ।

वे भेद भी इसी सूत्र द्वारा निकाले जाते हैं -

(उत्कृष्ट स्थिति — जघन्य स्थिति) + 1

इस प्रकार इतने निरंतर स्थिति-भेद और
निकलते हैं -

मिथ्यात्व के निरंतर भेद

जीवसमास	उत्कृष्ट	– जघन्य	+ 1	लब्ध
असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त	1000 सागर	1000 सागर – प/सं	+ 1	पल्य/सं + 1
चतुरिन्द्रिय	100 सागर	100 सागर – प/सं	+ 1	पल्य/सं + 1
त्रीन्द्रिय	50 सागर	50 सागर – प/सं	+ 1	पल्य/सं + 1
द्वीन्द्रिय	25 सागर	25 सागर – प/सं	+ 1	पल्य/सं + 1
एकेन्द्रिय	1 सागर	1 सागर – प/असं	+ 1	पल्य/असं + 1

इन सब निरंतर भेदों का जोड़ $\frac{प}{सं।प}$ होता है ।

$$\frac{प}{सं} + \frac{प}{सं} + \frac{प}{सं} + \frac{प}{सं} + \frac{प}{असं} = \frac{प}{सं}$$

इन्हें संख्यात पल्य में जोड़ने पर मिथ्यात्व के सर्व निरंतर स्थिति भेद प्राप्त होते हैं ।

$$\text{संख्यात पल्य} + \frac{प}{सं} = \text{संख्यात पल्य}$$

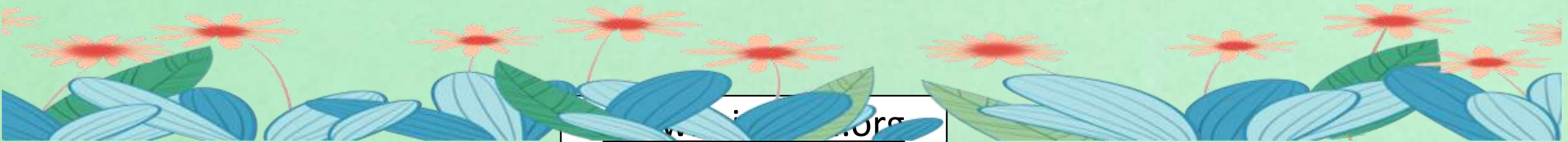
इसी प्रकार शेष कर्मों के भी सर्व निरंतर भेद यथायोग्य संख्यात पल्य प्रमाण होते हैं ।

* अपर्याप्त जीव-समास के स्थितिभेद पर्याप्त जीवसमास के बीच में ही आते हैं ।

इसलिए उन्हें अलग से नहीं कहा है ।

संखेज्जसहस्साणिवि, सेढीरूढम्मि सांतरा होंति ।
सगसग अवरोत्ति हवे, उक्कस्सादो दु सेसाणं ॥946॥

- अर्थ— सम्यक्, देशसंयम, सकलसंयम और श्रेणी के अभिमुख हुए जीवों के सांतर स्थिति के भेद संख्यात हजार हैं ।
- शेष 12 जीवसमासों में उत्कृष्ट स्थिति से जघन्य स्थितिपर्यंत क्रम से एक-एक समय घटते हुए निरंतर स्थिति के भेद होते हैं
॥946॥



सांतर स्थिति भेद

सम्यक्त्व, देशसंयम, सकलसंयम के सन्मुख और उपशम या क्षपक श्रेणी पर आरूढ़ जीव सांतर स्थिति के भेदों को प्राप्त करते हैं ।

उपर्युक्त सभी जीव अधःप्रवृत्तकरण के पहले समय से अंतर्मुहूर्त तक यथायोग्य अंतःको-2 सागर प्रमाण स्थिति बांधते हैं ।

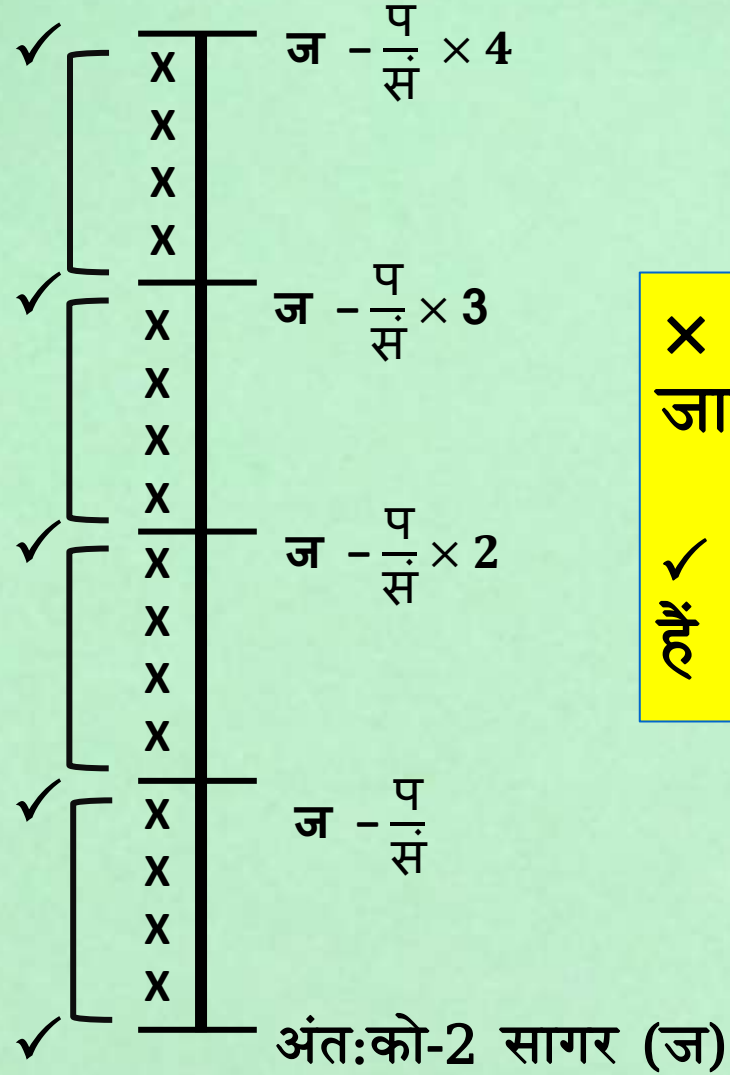
अंतर्मुहूर्त पश्चात् स्थिति-बंधापसरण के द्वारा एक साथ पल्य का संख्यातवां भाग घटाकर स्थिति बांधते हैं ।

एक अंतर्मुहूर्त पश्चात् पुनः पल्य का संख्यातवां भाग घटाकर स्थिति बंध करते हैं ।

ऐसे संख्यात हजार स्थितिबंधापसरण उपर्युक्त प्रत्येक स्थिति में पाये जाते हैं ।

अतः इन सबको मिलाकर प्रत्येक कर्म के संख्यात हजार सांतर स्थिति भेद पाये जाते हैं ।

अधःप्रवृत्तकरण आदि के समय कर्मों का स्थिति-बंध



× ये स्थिति के भेद नहीं पाये जाते हैं ।

✓ ये स्थिति के भेद पाये जाते हैं ।

➤ Reference : गोम्मटसार कर्मकांड, सम्यग्ज्ञान चंद्रिका, धवल पुस्तक 10

Presentation developed by
Smt. Sarika Vikas Chhabra

➤ For updates / feedback / suggestions, please contact

➤ Sarika Jain, sarikam.j@gmail.com

➤ www.jainkosh.org

➤ 📞: 94066-82889

• इसी विषय के विडियो लेक्चर हमारे चैनल पर उपलब्ध हैं । आप अवश्य लाभ लें । www.Jainkosh.org/wiki/Videos पेज पर जाएँ एवं प्लेलिस्ट चुनें ।